CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(a). अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्यकुसुम-सा खिला कर्ण, जग की आँखों से दूर।
नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुञ्ज-कानन में।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल।
जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग।
रंगभूमि में अर्जुन था सब समाँ अनोखा बाँधे
बढ़ा भीड़-भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे।
कहता हुआ, 'तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल।'
तूने जो जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ,
चाहे तो कुछ नयी कलाएँ भी सिखला सकता हूँ।
आँख खोलकर देख, कर्ण के हाथों का व्यापार
फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार।। [5 अंक]

1(a)(i). काव्यांश में कठिन साधना में निरत किसे बताया गया है ? [1 अंक]

(A) कर्ण
(B) अर्जुन
(C) भीम
(D) दुर्योधन

सही उत्तर: (A) कर्ण

हल:

अवधारणा:

- कवि ने स्पष्ट कहा है कि कठिन साधना में लगा व्यक्ति कर्ण है। नगर के कोलाहल और नगरवासियों से दूर रहकर वह तन और मन दोनों से अभ्यास करता है। उसके लिए कर्मठता और एकाग्रता मुख्य हैं।
- उत्तर का चयन काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंगगत आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: कर्ण का नाम पहचानें "वन्यकुसुम-सा खिला कर्ण" में साधना करने वाले का नाम सीधे दिया गया है। पहले की पंक्तियों का तन-मन से उद्योग करने वाला व्यक्ति भी यही है। इसलिए किसी दूसरे योद्धा का नाम अनुमान से नहीं चुनना चाहिए।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच अर्जुन रंगभूमि में अपनी कला दिखा रहा है, साधना वाले वर्णन का पात्र नहीं है। भीम और दुर्योधन का इस काव्यांश में साधक के रूप में उल्लेख नहीं है। अतः (B), (C) और (D) पाठ के प्रत्यक्ष साक्ष्य से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है : कर्ण।

त्वरित सुझाव: साधना वाले वर्णन को उसके बाद आए नाम "कर्ण" से जोड़ें; रंगभूमि के अर्जुन से उसे न मिलाएँ।

1(a)(ii). प्रकृति का रहस्य समझ से परे क्यों होता है ? [1 अंक]

(A) शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से

(B) प्रकृति में विद्यमान भिन्नताओं से

(C) प्रकृति के रहस्यों से अनजान रहने से

(D) मनुष्य का अपना सीमित सामर्थ्य होने से

सही उत्तर: (A) शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से

हल:

अवधारणा:

- यहाँ प्रकृति का रहस्य सामाजिक प्रतिष्ठा और वास्तविक प्रतिभा के अंतर से जुड़ा है। कवि सामान्य और उपेक्षित परिवेश में असाधारण गुण जन्म लेने की बात करता है।
- उत्तर का चयन काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंगगत आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग से रहस्य समझें "गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल" का अर्थ है कि साधारण या निर्धन परिवेश में भी महान प्रतिभाएँ मिलती हैं। फूल केवल राजाओं के उपवनों में नहीं खिलते। यह घटना बाहरी शक्ति, साधन और प्रतिष्ठा के अनुमान से अलग होती है।

चरण 2: विकल्पों में उपयुक्त आशय चुनें (A) इसी अप्रत्याशित घटना की ओर संकेत करता है। (B) प्रकृति की सामान्य भिन्नताओं का कथन है, गुदड़ी में लाल वाले विशेष प्रसंग का नहीं। (C) केवल अनजान होने की बात दोहराता है। (D) मनुष्य की सीमा बताता है, जबकि कवि का बल साधनहीन परिवेश की प्रतिभा पर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है : शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से।

त्वरित सुझाव: "गुदड़ी" और "कीमती लाल" का विरोध देखें; यही साधन और प्रतिभा के अप्रत्याशित संबंध का संकेत है।

1(a)(iii). जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है – पंक्ति का भाव है – [1 अंक]

(A) बादल सूर्य को ढक नहीं सकता।

(B) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता।

(C) बादल रूपी चादर सूर्य को ढक लेती है।

(D) सूर्य शक्ति का प्रतीक है।

सही उत्तर: (B) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता।

हल:

अवधारणा:

- रवि और जलद-पटल को केवल प्राकृतिक दृश्य के रूप में नहीं पढ़ना चाहिए। यहाँ वे प्रतिभा और उसे ढकने वाली उपेक्षा के प्रतीक हैं।
- उत्तर का चयन काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंगगत आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: प्रतीकों का संबंध पहचानें बादलों के पीछे सूर्य कुछ समय छिप सकता है, पर उसका प्रकाश स्थायी रूप से नहीं दबता। इसी तरह कर्ण की प्रतिभा नगर से दूर रहने और समाज की उपेक्षा के कारण कुछ समय अनदेखी रही है।

चरण 2: प्रसंग से विकल्पों की जाँच करें कर्ण अंततः रंगभूमि में आकर अपना पौरुष दिखाता है। इसलिए (B) सही भावार्थ है। (A) भौतिक कथन है और अस्थायी आवरण की संभावना भी नकारता है। (C) केवल शाब्दिक दृश्य बताता है। (D) सूर्य का सामान्य प्रतीकार्थ देता है, पूरी पंक्ति का आशय नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है : प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता।

त्वरित सुझाव: रवि को प्रतिभा और बादलों को उपेक्षा मानकर देखें; प्रतीक का भाव चुनें, केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं।

1(a)(iv). कर्ण ने अर्जुन को क्यों ललकारा होगा ? [1 अंक]

(A) अपनी धनुर्विद्या दिखाने के लिए

(B) अपनी योग्यता बताने के लिए

(C) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

(D) समाज को अपनी कला दिखाने के लिए

सही उत्तर: (C) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कर्ण की चुनौती का उद्देश्य उसके अपने शब्दों से निर्धारित होता है। उसके कथन में समान प्रदर्शन की क्षमता के साथ नई कलाएँ सिखाने का आत्मविश्वास भी है।
- उत्तर का चयन काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंगगत आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: चुनौती के शब्द पढ़ें कर्ण अर्जुन से कहता है कि वह उसके सारे करतब दिखा सकता है और चाहे तो कुछ नई कलाएँ भी सिखा सकता है। वह अर्जुन के सुयश को धूल में मिलाने की बात भी करता है। इससे अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का स्पष्ट उद्देश्य सामने आता है।

चरण 2: अन्य आशयों से अंतर करें (A) धनुर्विद्या दिखाना और (B) योग्यता बताना इस चुनौती के सामान्य पक्ष हैं। (D) समाज को कला दिखाना भी प्रदर्शन तक सीमित है। लेकिन अर्जुन को सीधे ललकारने और उसे नई कलाएँ सिखाने की बात विशेष रूप से उससे श्रेष्ठ सिद्ध होने की इच्छा बताती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है : अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए।

त्वरित सुझाव: "नई कलाएँ भी सिखला सकता हूँ" को पहचानें; इससे साधारण प्रदर्शन से आगे श्रेष्ठता की चुनौती स्पष्ट होती है।

1(a)(v). कर्ण किस प्रकार के मनुष्य को धिक्कारता है ? [1 अंक]

(A) कायर मनुष्य को

(B) वीरता दिखलाने वाले को

(C) सस्ती लोकप्रियता वाले को

(D) अपनी प्रशंसा में रत रहने वाले को

सही उत्तर: (C) सस्ती लोकप्रियता वाले को

हल:

अवधारणा:

- कर्ण की निंदा का आधार अंतिम पंक्ति में आए "सस्ता सुयश" शब्द हैं। सुयश यश या प्रसिद्धि है और यहाँ सस्ता उसके आसानी से मिले, अपर्याप्त आधार वाले रूप को बताता है।
- उत्तर का चयन काव्यांश के शब्दों और उनके प्रसंगगत आशय के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति का अर्थ लें "फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार" में ऐसे व्यक्ति को धिक्कारा गया है जो सस्ती प्रसिद्धि पाकर अभिमान से फूल जाता है। कर्ण वास्तविक योग्यता और कौशल की परीक्षा चाहता है।

चरण 2: विकल्पों को पाठ से मिलाएँ इसलिए (C) सस्ती लोकप्रियता वाले व्यक्ति का उल्लेख सबसे सटीक है। (A) कायरता की बात इस पंक्ति में नहीं है। (B) वीरता दिखाना निंदा का कारण नहीं है। (D) आत्मप्रशंसा का भाव निकट लगता है, पर वह सस्ते सुयश के विशेष आधार को स्पष्ट नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है : सस्ती लोकप्रियता वाले को।

त्वरित सुझाव: अंतिम पंक्ति के "सस्ता सुयश" को विकल्प की "सस्ती लोकप्रियता" से सीधे मिलाएँ।

अथवा

1(b). हो गया पूर्ण अज्ञातवास,
पांडव लौटे वन से सहास,
पावक में कनक-सदृश तप कर
वीरत्व लिए कुछ और प्रखर
नस-नस में तेज-प्रवाह लिये,
कुछ और नया उत्साह लिये।
सच है, विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।
मुख से न कभी उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं
उद्योग निरत नित रहते हैं
भूलों का मूल नसाने को
खुद बढ़ विपत्ति पर छाने को।
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके वीर नर के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है। [5 अंक]

1(b)(i). 'अज्ञातवास' का अर्थ है ? [1 अंक]

(A) वन में बसना
(B) गाँव में बसना
(C) अनजान स्थान पर रहना
(D) गुप्त रूप से रहना

सही उत्तर: (D) गुप्त रूप से रहना

हल:

अवधारणा:

- अज्ञातवास में व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान छिपाकर रहता है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पद्यांश में पांडवों के अज्ञातवास के पूर्ण होने का उल्लेख है। यहाँ अज्ञात रहने का संबंध अपनी पहचान को दूसरों से छिपाने से है। इसलिए इसका सटीक अर्थ गुप्त रूप से रहना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) वन में बसना वनवास है; (B) गाँव में बसना सामान्य निवास है। (C) अनजान स्थान पर रहना

केवल अपरिचित स्थान का संकेत देता है, पहचान छिपाने का नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — गुप्त रूप से रहना।

त्वरित सुझाव: अज्ञातवास में स्थान से अधिक पहचान छिपाना आवश्यक है; इसे केवल वनवास से अलग रखें।

1(b)(ii). पांडव वन से किस रूप में लौटे थे ? [1 अंक]

(A) कमजोर होकर

(B) दृढ़ होकर

(C) निर्विकार भाव से

(D) बदले की भावना से

सही उत्तर: (B) दृढ़ होकर

हल:

अवधारणा:

- कठिनाइयाँ पांडवों के साहस और वीरत्व को अधिक प्रखर बनाती हैं।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण कवि पांडवों को आग में तपे सोने के समान बताता है। उनके वीरत्व के लिए कुछ और प्रखर तथा उनके उत्साह के लिए कुछ और नया कहा गया है। इससे स्पष्ट है कि वे वन से अधिक दृढ़ होकर लौटे थे।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) कमजोर होकर लौटना उनके बढ़े हुए तेज के विपरीत है। (C) निर्विकार भाव उनकी नई ऊर्जा को व्यक्त नहीं करता। (D) बदले की भावना का इन पंक्तियों में उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — दृढ़ होकर।

त्वरित सुझाव: "कनक-सदृश तप कर" और "वीरत्व ... प्रखर" को साथ पढ़ें; लौटने पर बढ़ी दृढ़ता स्पष्ट होगी।

1(b)(iii). विपत्ति में किसे घबराहट होती है ? [1 अंक]

(A) कायर को

(B) कमजोर को

(C) साहसी को

(D) वीर को

सही उत्तर: (A) कायर को

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में कायर और शूरवीर की विपत्ति के समय होने वाली प्रतिक्रिया का अंतर है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण निर्णायक पंक्ति है, सच है, विपत्ति जब आती है / कायर को ही दहलाती है। दहलाने का अर्थ भयभीत करना है। इसलिए विपत्ति में घबराने वाला व्यक्ति कायर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) कमजोर शब्द यहाँ कवि का दिया हुआ उत्तर नहीं है। (C) साहसी तथा (D) वीर के लिए अगली

पंक्तियाँ कहती हैं कि वे विचलित नहीं होते और धीरज नहीं खोते।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — कायर को।

त्वरित सुझाव: "कायर को ही दहलाती है" में "ही" पर ध्यान दें; यही विकल्प को सीधे निश्चित करता है।

1(b)(iv). 'पर्वत के जाते पाँव उखड़' – पंक्ति का भाव है [1 अंक]

(A) उत्साह का संचार होना

(B) कठिनाइयों का समाप्त होना

(C) अवरोध का सामने आना

(D) हिम्मत का समाप्त होना

सही उत्तर: (B) कठिनाइयों का समाप्त होना

हल:

अवधारणा:

- पर्वत कठिन और विशाल बाधाओं का प्रतीक है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण पर्वत के जाते पाँव उखड़ का आशय है कि दृढ़ प्रयास करने वाले मनुष्य के सामने बड़ी से बड़ी कठिनाई भी टिक नहीं पाती। पर्वत का उखड़ना बाधाओं के परास्त होने का प्रतीक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) उत्साह का संचार कारण हो सकता है, पर इस पंक्ति का प्रत्यक्ष भाव नहीं। (C) अवरोध का सामने आना उलटा अर्थ है। (D) हिम्मत समाप्त होना वीर के अडिग प्रयत्न के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — कठिनाइयों का समाप्त होना।

त्वरित सुझाव: पर्वत को बाधा का प्रतीक मानें; उसके पाँव उखड़ने से बाधा के हटने का अर्थ निकालें।

1(b)(v). 'मानव जब जोर लगाता है' – पंक्ति में मनुष्य के किस प्रकार के गुण की ओर संकेत है ? [1 अंक]

(A) साहस

(B) शक्ति

(C) परिश्रम

(D) समर्पण

सही उत्तर: (C) परिश्रम

हल:

अवधारणा:

- निरंतर उद्योग और प्रयत्न असंभव दिखने वाले काम को संभव बनाते हैं।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण मानव जब जोर लगाता है में जोर लगाने से सक्रिय प्रयास और कठिन परिश्रम का भाव निकलता है। इससे पहले उद्योग निरत नित रहते हैं भी निरंतर श्रम करने का संदेश देता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) साहस विपत्ति में न डरने का गुण है और (B) शक्ति सामर्थ्य है; यहाँ उस सामर्थ्य का श्रम में

प्रयोग मुख्य है। (D) समर्पण किसी के प्रति अर्पित होने का भाव है, जिसका इस पंक्ति में संकेत नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — परिश्रम।

त्वरित सुझाव: "जोर लगाता" को "उद्योग निरत" से जोड़ें; यहाँ निरंतर परिश्रम का संकेत मिलता है।

---

2. राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी सार्वजनिक और निजी स्वच्छता के प्रति चिंतित थे। दक्षिण अफ्रीका में बिताए दिनों के बाद से ही यह उनके सत्याग्रह अभियान का हिस्सा था। गांधी जी के लिए, समाज में स्वच्छता के लिए अभियान एक जाति विहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था। उन्होंने स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने और इसे अस्पृश्यता को दूर करने की कुंजी मानने के अपने विचार को दोहराते हुए कहा था, "हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है।" गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका में थे तभी से उन्होंने अपनी साफ-सफाई का काम स्वयं करना शुरू कर दिया था और भारतीयों को भी सलाह दी थी कि वे अपना शौचालय साफ और सूखा रखें। वे जब भारत लौटे, तो उन्होंने दृढ़ता से भारतीयों के लिए स्वच्छता और उन्हें स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

गांधी जी ने कहा था, "स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।" हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने स्वच्छता पर गांधी जी के विचारों से प्रेरणा ली और उनकी जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया। यह अभियान एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया और प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय से इसमें शामिल होने और अपने आस-पास सफाई रखने का आग्रह किया।

इस राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने और स्वच्छता की बढ़ती चुनौतियों को दूर करने के लिए, स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय ने एक बहु-आयामी कार्यनीति अपनाई और स्वच्छता तथा स्वास्थ्य में सुधार के लिए कई पहल कीं। 2015 के बाद से इसने विशेष रूप से स्वच्छता को अपने नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार लाने के अपने प्रयासों का केन्द्र बिंदु बनाया है। ये पहल अपने कार्यक्रमों के माध्यम से स्वास्थ्य संस्थानों और लोगों में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करती है और अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर इसे समग्रता से कार्यान्वित करती है।

स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय की कायाकल्प पहल में सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में केन्द्र सरकार के संस्थानों और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में बुनियादी ढाँचे में सुधार, स्वच्छता व स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण-नियंत्रण कार्यों में सुधार लाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। स्वास्थ्य सुविधाओं का मूल्यांकन कई मानदंडों के आधार पर किया जाता है, और हर साल प्रत्येक स्तर पर अधिकतम अंक पाने वाले संस्थानों को कायाकल्प पुरस्कार प्रदान कर मान्यता दी जाती है। [10 अंक]

2(i). महात्मा गांधी की प्रमुख चिंता थी – [1 अंक]

(A) स्वच्छता

(B) सत्याग्रह

(C) जाति-पाँति

(D) छुआछूत

सही उत्तर: (A) स्वच्छता

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की आरंभिक पंक्ति विषय और मुख्य चिंता स्पष्ट करती है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण आरंभ में स्पष्ट कहा गया है कि महात्मा गांधी सार्वजनिक और निजी स्वच्छता के प्रति चिंतित थे। आगे स्वयं सफाई करने तथा स्वच्छता के प्रति लोगों को शिक्षित करने के उदाहरण इसी प्रमुख चिंता का विस्तार हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) सत्याग्रह वह अभियान था जिसका स्वच्छता एक हिस्सा बनी। (C) जाति-पाँति तथा (D) छुआछूत सामाजिक समस्याएँ हैं, जिनके निवारण से स्वच्छता जोड़ी गई है; मुख्य चिंता का सीधा उत्तर स्वच्छता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — स्वच्छता।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को पाठ की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ देने वाला विकल्प चुनें।

2(ii). प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत कब की गई ? [1 अंक]

(A) स्वतंत्रता दिवस से

(B) गणतंत्र दिवस से

(C) गांधी जयन्ती से

(D) सद्भावना दिवस से

सही उत्तर: (C) गांधी जयन्ती से

हल:

अवधारणा:

- आरंभ के अवसर की पहचान गद्यांश में दिए स्पष्ट समय-संकेत से होती है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण गद्यांश में कहा गया है कि प्रधानमंत्री ने गांधी जी के स्वच्छता संबंधी विचारों से प्रेरणा लेकर उनकी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया। यहाँ उनकी का संबंध महात्मा गांधी से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) स्वतंत्रता दिवस, (B) गणतंत्र दिवस और (D) सद्भावना दिवस का अभियान की शुरुआत के अवसर के रूप में उल्लेख नहीं किया गया है। इसलिए केवल गांधी जयन्ती वाला विकल्प गद्यांश से प्रमाणित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — गांधी जयन्ती से।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को पाठ की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ देने वाला विकल्प चुनें।

2(iii). 'अस्पृश्यता' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) जातीय भेदभाव

(B) वर्गीय भेदभाव

(C) आर्थिक भेदभाव

(D) सामाजिक भेदभाव

सही उत्तर: (A) जातीय भेदभाव

हल:

अवधारणा:

- अस्पृश्यता जाति के आधार पर किसी को अछूत मानने की प्रथा है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण गद्यांश स्वच्छता के अभियान को जाति विहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया बताता है और उसे अस्पृश्यता दूर करने से जोड़ता है। इससे इस शब्द का सटीक संदर्भ जाति के आधार पर किया जाने वाला भेदभाव है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) वर्गीय और (C) आर्थिक भेदभाव क्रमशः वर्ग और धन के आधार पर होते हैं। (D) सामाजिक भेदभाव व्यापक श्रेणी है; अस्पृश्यता के विशिष्ट आधार को (A) जातीय भेदभाव अधिक ठीक व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — जातीय भेदभाव।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को पाठ की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ देने वाला विकल्प चुनें।

2(iv). भारतीयों को स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? [1 अंक]

(A) स्वच्छता को लेकर सामाजिक भेदभाव के कारण

(B) भारतीयों द्वारा स्वच्छता के कार्य को हेय मानने के कारण

(C) स्वच्छता स्वयं का कार्य नहीं मानने के कारण

(D) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण

सही उत्तर: (D) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में शिक्षा की आवश्यकता स्वच्छता के महत्त्व और जिम्मेदारी की समझ से जुड़ी है।
- उत्तर चुनते समय दिए गए पाठ के शब्दों और उनके प्रसंग को प्राथमिकता दी जाती है।

चरण 1: पाठ से प्रमाण गांधी जी ने भारत लौटकर स्वच्छता और उसके प्रति भारतीयों को शिक्षित करने पर जोर दिया। वे स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कहते हैं। इन बातों से समझ आता है कि लोगों को उसका महत्त्व समझाना आवश्यक था।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सामाजिक भेदभाव, (B) सफाई के कार्य को हेय मानना और (C) उसे अपना कार्य न मानना स्वच्छता के अभियान से जुड़े संकुचित पक्ष हैं। प्रश्न शिक्षा की व्यापक आवश्यकता पूछता है; इसका उपयुक्त कारण स्वच्छता का महत्त्व न समझना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को पाठ की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ, फिर सबसे सटीक अर्थ देने वाला विकल्प चुनें।

2(ix). स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी जागरूकता की आवश्यकता क्यों है ? [1 अंक]

(A) बीमारियों से बचने के लिए

(B) जनता को जागरूक करने के लिए

(C) स्वस्थ समाज बनाने के लिए

(D) देश के विकास के लिए

सही उत्तर: (C) स्वस्थ समाज बनाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें गद्यांश में स्वच्छता को जातिविहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बताया गया है। मंत्रालय की पहल भी नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार के लिए है। इसलिए जागरूकता का व्यापक उद्देश्य स्वस्थ समाज का निर्माण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें बीमारियों से बचना (A) इस उद्देश्य का एक सीमित लाभ है। जनता को जागरूक करना (B) प्रश्न की बात को ही दोहराता है, उसका प्रयोजन नहीं बताता। देश का विकास (D) व्यापक परिणाम हो सकता है, पर अनुच्छेद का प्रत्यक्ष केंद्र स्वस्थ समाज है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — स्वस्थ समाज बनाने के लिए।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य पूछे जाने पर साधन और अंतिम सामाजिक लाभ में अंतर करें।

2(v). 'स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है' – कथन का आशय है – [1 अंक]

(A) स्वच्छता स्वतंत्रता का आधार

(B) स्वस्थ नागरिक से स्वतंत्रता

(C) स्वच्छता सबसे आवश्यक

(D) स्वच्छता से स्वास्थ्य

सही उत्तर: (C) स्वच्छता सबसे आवश्यक

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें गांधी जी के कथन में स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्त्व दिया गया है। इस तुलना का उद्देश्य स्वच्छता की अत्यधिक आवश्यकता और प्राथमिकता स्पष्ट करना है। अतः कथन का आशय यह है कि स्वच्छता सबसे आवश्यक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) स्वतंत्रता का आधार होने का संबंध जोड़ता है, जो कथन में नहीं है। (B) स्वस्थ नागरिकों से स्वतंत्रता मिलने का अर्थ देता है, जिसका उल्लेख नहीं है। (D) स्वच्छता का स्वास्थ्य से संबंध बताता है, किंतु यहाँ व्यक्त सर्वोच्च प्राथमिकता को नहीं पकड़ता।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — स्वच्छता सबसे आवश्यक।

त्वरित सुझाव: अधिक महत्त्वपूर्ण जैसे तुलनात्मक शब्दों से कथन की प्राथमिकता पहचानें।

2(vi). स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय का संबंध है – [1 अंक]

(A) छोटे बच्चों के स्वास्थ्य से

(B) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से

(C) भारत सरकार की योजनाओं से

(D) अस्पताल तथा कर्मचारियों से

सही उत्तर: (B) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें अनुच्छेद के अनुसार स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय ने स्वच्छता तथा स्वास्थ्य में सुधार के लिए अनेक पहल की हैं। इन कार्यक्रमों से स्वास्थ्य संस्थानों और लोगों में जागरूकता उत्पन्न होती है। इस स्पष्ट उल्लेख से मंत्रालय का संबंध स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) कार्यक्षेत्र को केवल छोटे बच्चों तक सीमित करता है। (C) सरकारी योजनाओं का सामान्य उल्लेख है, उससे संबंधित विशेष विषय नहीं बताता। (D) केवल अस्पताल और कर्मचारियों तक सीमित है, जबकि गद्यांश में नागरिकों और स्वास्थ्य संस्थानों दोनों की चर्चा है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से।

त्वरित सुझाव: संस्था का कार्यक्षेत्र चुनते समय अनुच्छेद में बताए गए मुख्य कार्यों को मिलाएँ।

2(vii). किसी भी देश में योजना बनाने का उद्देश्य होता है – [1 अंक]

(A) अधिकाधिक धन कमाना।

(B) संबंधित व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना।

(C) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

(D) लोगों को योजना के बारे में बताना।

सही उत्तर: (C) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें गद्यांश में सरकारी पहलों का उद्देश्य नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार बताया गया है। कायाकल्प पहल भी सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों के ढाँचे और सेवाओं को बेहतर बनाती है। इस संदर्भ में योजना का उद्देश्य नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें विकल्प (A) का अधिक धन कमाना यहाँ उद्देश्य नहीं है। (B) केवल संबंधित व्यक्तियों के लाभ तक सीमित है, जबकि सरकारी योजना नागरिकों के कल्याण के लिए है। (D) योजना की जानकारी देना एक साधन हो सकता है; वास्तविक उद्देश्य सुविधाओं और सेवाओं का लाभ पहुँचाना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

त्वरित सुझाव: योजना के प्रचार और उससे नागरिकों को मिलने वाले वास्तविक लाभ को अलग पहचानें।

2(viii). 'कायाकल्प पहल' योजना के अंतर्गत आने वाले कार्यक्रमों में इनमें से क्या सम्मिलित नहीं है ? [1 अंक]

(A) संक्रमण नियंत्रण कार्यक्रम

(B) स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम

(C) स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम

(D) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम

सही उत्तर: (D) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें कायाकल्प पहल के अंतर्गत बुनियादी ढाँचे, स्वच्छता, स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण नियंत्रण में सुधार का उल्लेख है। प्रश्न में पूछा गया है कि इनमें क्या सम्मिलित नहीं है। सामान्य शिक्षा संबंधी कार्यक्रम इस सूची में नहीं आते।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें संक्रमण नियंत्रण (A), स्वास्थ्य संबंधी कार्य (B) और स्वच्छता संबंधी कार्य (C) सभी बताए गए उद्देश्यों से जुड़े हैं। इसलिए ये तीनों विकल्प बाहर नहीं किए जा सकते। गद्यांश में स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने का विचार है, पर उसे कायाकल्प के अंतर्गत अलग शिक्षा कार्यक्रम नहीं कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — शिक्षा संबंधी कार्यक्रम।

त्वरित सुझाव: नहीं जैसे निषेधसूचक शब्द पर ध्यान देकर कार्यक्रमों की दी हुई सूची से मिलान करें।

2(x). स्वच्छता को आप किस प्रकार की जिम्मेदारी मानते हैं ? [1 अंक]

(A) सामूहिक

(B) पारिवारिक

(C) सामाजिक

(D) व्यक्तिगत

सही उत्तर: (D) व्यक्तिगत

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें गद्यांश में गांधी जी ने स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने पर बल दिया है। उनका कथन है कि हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है। वे अपना सफाई का काम स्वयं करते थे और दूसरों को भी यही सलाह देते थे। इससे व्यक्तिगत जिम्मेदारी स्पष्ट होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें सामूहिक (A) और सामाजिक (C) स्तर पर स्वच्छता के लाभ अवश्य मिलते हैं, लेकिन प्रश्न के प्रसंग में स्वयं की जिम्मेदारी पर जोर है। पारिवारिक (B) विकल्प जिम्मेदारी को परिवार तक सीमित कर देता है। व्यक्ति का अपना योगदान बताने वाला विकल्प (D) सबसे सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — व्यक्तिगत।

त्वरित सुझाव: प्रसंग में स्वयं और व्यक्तिगत जैसे संकेतों को उत्तर का आधार बनाएँ।

---

3. छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष। [5 अंक]

3(i). काव्यांश में प्रयुक्त 'खेत' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) जमीन

(B) कागज

(C) भाव

(D) शब्द

सही उत्तर: (B) कागज

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।

- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें कवि ने छोटे चौकोने खेत के तुरंत बाद कागज का एक पन्ना कहा है। इससे स्पष्ट है कि यहाँ खेत वास्तविक कृषि भूमि नहीं, कविता लिखने का कागज है। जैसे खेत में फसल उगती है, वैसे ही इस कागज पर शब्दों और भावों की रचना विकसित होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें जमीन (A) खेत का सामान्य अर्थ है, पर कविता के प्रतीकात्मक प्रसंग का अर्थ नहीं। भाव (C) रचना की प्रेरक सामग्री हैं और शब्द (D) उस रचना के अंकुर हैं। इन्हें खेत नहीं कहा गया है। खेत का स्थान कागज लेता है, इसलिए (B) उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है — कागज।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ तय करते समय उसके तुरंत बाद दी गई पहचानसूचक पंक्ति पढ़ें।

3(ii). 'कोई अंधड़ कहीं से आया' – पंक्ति में प्रयुक्त अंधड़ का अर्थ है – [1 अंक]

(A) तूफान

(B) धूल भरी आँधी

(C) भावों की आँधी

(D) कठिनाइयाँ

सही उत्तर: (C) भावों की आँधी

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें काव्यांश कविता की सृजन प्रक्रिया को खेती के रूपक में बताता है। अंधड़ आने के बाद क्षण का बीज बोया जाता है और कल्पना से शब्द विकसित होते हैं। इसलिए अंधड़ कवि के मन में अचानक उमड़ने वाले भावों की तीव्र हलचल का प्रतीक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें तूफान (A) और धूल भरी आँधी (B) अंधड़ के शाब्दिक अर्थ हैं, पर यहाँ प्राकृतिक घटना का वर्णन नहीं है। कठिनाइयाँ (D) भी संदर्भ से मेल नहीं खातीं, क्योंकि आगे रचना के जन्म और विकास की बात है। भावों की आँधी (C) इसी सृजनशील उद्वेलन को व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है — भावों की आँधी।

त्वरित सुझाव: काव्य में शाब्दिक अर्थ चुनने से पहले देखें कि पूरा प्रसंग किस आंतरिक अनुभव का है।

3(iii). बीज का अस्तित्व किसके संसर्ग से गल गया ? [1 अंक]

(A) कल्पना

(B) धरती

(C) भाव

(D) कविता

सही उत्तर: (A) कल्पना

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें कवि कहता है कि कल्पना के रसायनों को पीकर बीज नि:शेष गल गया। इससे बीज के गलने का कारण सीधे कल्पना से जुड़ता है। अनुभव या भाव का बीज कवि की कल्पना में अपना मूल रूप छोड़कर काव्यरचना का रूप धारण करने लगता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें धरती (B) का विकल्प वास्तविक खेती से लिया गया है, जबकि यहाँ रूपकात्मक सृजन की बात है। भाव (C) स्वयं बीज के समान प्रेरक तत्त्व हैं। कविता (D) सृजन का परिणाम है। दिए गए कथन में बीज को रूपांतरित करने वाला तत्त्व कल्पना ही है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है — कल्पना।

त्वरित सुझाव: किसके संसर्ग से जैसे प्रश्न में पंक्ति के कारणसूचक पद को सीधे पहचानें।

3(iv). भावना रूप बीजों के गलने से क्या परिणाम मिला ? [1 अंक]

(A) कवि की मेहनत व्यर्थ हो गई

(B) धरती पर अंकुर फूट पड़े

(C) कवि पुन: कल्पना करने लगा

(D) शब्दों के अंकुर फूट पड़े

सही उत्तर: (D) शब्दों के अंकुर फूट पड़े

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न का उत्तर दिए गए गद्यांश या काव्यांश के प्रसंग और उसके प्रत्यक्ष संकेत के आधार पर चुना जाता है।
- विकल्प का केवल सामान्य अर्थ नहीं, पूरे प्रसंग से उसका मेल भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और प्रमाण पहचानें बीज के गलने के बाद काव्यांश में स्पष्ट रूप से शब्द के अंकुर फूटने की बात कही गई है। भाव या अनुभव का बीज कल्पना से रूपांतरित होकर शब्दों में व्यक्त होता है। यही कविता की रचना की शुरुआत है और आगे वही पल्लव तथा पुष्पों के रूप में विकसित होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कवि की मेहनत व्यर्थ होना (A) गलत है, क्योंकि रचना विकसित होती है। धरती पर अंकुर फूटना (B) रूपक को वास्तविक खेती समझ लेता है। कवि का पुन: कल्पना करना (C) प्रश्न का बताया गया परिणाम नहीं है। शब्दों के अंकुर फूटना (D) पंक्ति का सीधा कथ्य है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है — शब्दों के अंकुर फूट पड़े।

त्वरित सुझाव: परिणाम पूछने पर संबंधित घटना के ठीक बाद आने वाली पंक्ति को प्रमाण बनाएँ।

3(v). 'कल्पना' को रसायन क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) सृजन को सुन्दर बनाने में सहायक

(B) सृजन को सरल बनाने में महत्त्वपूर्ण

(C) सृजन के विकास में सहायक तत्त्व

(D) सृजन का मूलभूत तत्त्व

सही उत्तर: (C) सृजन के विकास में सहायक तत्त्व

हल:

अवधारणा:

- कविता में भाव बीज है, कागज खेत है और कल्पना पोषण देने वाला रसायन है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कल्पना के रसायनों को पीकर बीज गलता है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। इससे स्पष्ट है कि कल्पना भाव को विकसित करके कविता का रूप देती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) केवल सुंदरता और (B) केवल सरलता तक सीमित हैं। (D) में मूलभूत तत्त्व कहा गया है, जबकि यहाँ बीज रूपी भाव पहले से है; कल्पना उसके विकास में सहायक है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है—सृजन के विकास में सहायक तत्त्व।

त्वरित सुझाव: कल्पना को भाव-बीज से अलग पहचानें: बीज आरंभ है और रसायन उसका विकास करता है।

4(i). 'न्यूजपेग' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) कथात्मक शैली में लेखन

(B) आलेख की तरह लेखन

(C) केस स्टडी प्रारूप में लेखन

(D) अन्य खबर से जोड़ कर लेखन

सही उत्तर: (D) अन्य खबर से जोड़ कर लेखन

हल:

अवधारणा:

- न्यूजपेग वह तात्कालिक समाचार-संदर्भ है जिससे किसी विषय की वर्तमान प्रासंगिकता जुड़ती है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें किसी लेख या विषय को हाल में हुई घटना अथवा दूसरी खबर से जोड़ना उसे समाचार का आधार देता है। इसी आधार को न्यूजपेग कहते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) कथात्मक शैली, (B) आलेख जैसा रूप और (C) केस स्टडी की प्रस्तुति लेखन के तरीके हैं। इनमें किसी खबर से जुड़ने का अनिवार्य संबंध व्यक्त नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है—अन्य खबर से जोड़ कर लेखन।

त्वरित सुझाव: न्यूजपेग में खबर से जुड़ाव खोजें; कथात्मक शैली या केस स्टडी केवल प्रस्तुति के तरीके हैं।

4(ii). समाचार पत्रों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों के बारे में जानकारी क्यों देनी पड़ती है ? [1 अंक]

(A) बाजार में टिके रहने के लिए

(B) सभी तरह के विषयों पर लेखन के लिए

(C) पाठकों की रुचियों के लिए

(D) विज्ञापन प्राप्त करने के लिए

सही उत्तर: (C) पाठकों की रुचियों के लिए

हल:

अवधारणा:

- पाठक समूहों की रुचियाँ और सूचना की आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें कुछ पाठक खेल में, कुछ अर्थव्यवस्था, विज्ञान, शिक्षा या अन्य विशेष क्षेत्रों में रुचि रखते हैं। अखबार इन रुचियों को संतुष्ट करने के लिए सामान्य समाचारों के साथ विशेष जानकारी देता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) बाजार में टिकना और (D) विज्ञापन पाना व्यावसायिक परिणाम हो सकते हैं। (B) हर विषय पर लिखना स्वयं मुख्य उद्देश्य नहीं है; यहाँ पाठकों की विशिष्ट रुचियाँ निर्णायक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है—पाठकों की रुचियों के लिए।

त्वरित सुझाव: विशेष क्षेत्र की सूचना का संबंध पाठकों की अलग-अलग रुचियों से जोड़कर विकल्प चुनें।

4(iii). बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को पत्रकारिता जगत में किस नाम से बुलाते हैं ? [1 अंक]

(A) संवाददाता

(B) अंशकालिक पत्रकार

(C) पूर्णकालिक पत्रकार

(D) फ्रीलांस पत्रकार

सही उत्तर: (A) संवाददाता

हल:

अवधारणा:

- बीट समाचार-संग्रह के लिए निर्धारित विषय, विभाग या क्षेत्र को कहते हैं।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें किसी निश्चित बीट की घटनाओं की जानकारी जुटाने, स्रोतों से संपर्क रखने और समाचार भेजने वाला रिपोर्टर संवाददाता कहलाता है। उसका परिचय समाचार-संग्रह के दायित्व से बनता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) अंशकालिक, (C) पूर्णकालिक और (D) फ्रीलांस रोजगार या कार्य-संबंध की स्थितियाँ बताते हैं। ये बीट कवर करने वाले रिपोर्टर के कार्यपरक नाम का उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है—संवाददाता।

त्वरित सुझाव: बीट विषय या क्षेत्र है; उसे कवर करने वाले का कार्यपरक नाम संवाददाता याद रखें।

4(iv). संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय लेखन को माना जाता है – [1 अंक]

(A) संपादक की आवाज़

(B) पत्रकार की आवाज़

(C) अख़बार की आवाज़

(D) पाठक की आवाज़

सही उत्तर: (C) अख़बार की आवाज़

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी मुद्दे पर समाचारपत्र की नीति और संस्थागत दृष्टिकोण व्यक्त करता है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें संपादकीय पृष्ठ का संपादकीय अखबार की ओर से लिखा जाता है। उसमें घटनाओं पर विश्लेषण के साथ समाचारपत्र का अपना पक्ष सामने आता है, इसलिए उसे अखबार की आवाज कहा जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) संपादक लेखन कर सकता है, पर विचार केवल उसका निजी मत नहीं माना जाता। (B) व्यक्तिगत पत्रकार और (D) पाठक की आवाज संपादकीय की संस्थागत पहचान नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है—अख़बार की आवाज़।

त्वरित सुझाव: संपादकीय में निजी लेखक की जगह समाचारपत्र का संस्थागत पक्ष पहचानें।

4(v). फीचर को किस प्रकार का लेखन माना जाता है ? [1 अंक]

(A) कथात्मक

(B) आत्मनिष्ठ

(C) वर्णनात्मक

(D) विवरणात्मक

सही उत्तर: (B) आत्मनिष्ठ

हल:

अवधारणा:

- फीचर तथ्याधारित होते हुए भी लेखक की अनुभूति, दृष्टि और रचनात्मक प्रस्तुति को स्थान देता है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें फीचर किसी विषय के मानवीय, रोचक और संवेदनात्मक पक्षों को उभारता है। उसमें लेखक का निजी दृष्टिकोण और अनुभवपूर्ण प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है; इस अर्थ में इसे आत्मनिष्ठ लेखन माना जाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) कथात्मक ढंग, (C) वर्णन और (D) विवरण फीचर में आ सकते हैं, लेकिन वे उसकी मूल प्रकृति का पूरा परिचय नहीं देते। आत्मनिष्ठता लेखक की दृष्टि की प्रधानता को स्पष्ट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है—आत्मनिष्ठ।

त्वरित सुझाव: फीचर में लेखक की अनुभूति और निजी दृष्टि पहचानें; यही आत्मनिष्ठता का संकेत है।

5. बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई, उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। [5 अंक]

5(i). बाजार को जादू क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) आपूर्ति करने के कारण

(B) भ्रम पैदा करने के कारण

(C) बाज़ार की महिमा के कारण

(D) जरूरत पैदा करने के कारण

सही उत्तर: (B) भ्रम पैदा करने के कारण

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बाजार का जादू रूप के आकर्षण से उत्पन्न मानसिक प्रभाव है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें आकर्षण में व्यक्ति को लगता है कि यह भी ले लूँ और वह भी ले लूँ। सभी सामान आवश्यक और आराम बढ़ाने वाले प्रतीत होते हैं। यह वास्तविक आवश्यकता के निर्णय को भ्रमित करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) आपूर्ति बाजार का सामान्य काम है और (C) महिमा उसका प्रभाव स्पष्ट नहीं करती। (D) जरूरत पैदा करना निकट लगता है, पर गद्यांश का जोर अनावश्यक वस्तुओं को भी जरूरी समझने के भ्रम पर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है—भ्रम पैदा करने के कारण।

त्वरित सुझाव: सभी सामान जरूरी लगने वाली पंक्ति को देखें; इसी से वास्तविक जरूरत और भ्रम का अंतर खुलता है।

5(ii). 'जादू की मर्यादा' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) प्रभाव की सीमा

(B) जादू का असर

(C) रूप के समान

(D) निश्चित प्रभाव

सही उत्तर: (A) प्रभाव की सीमा

हल:

अवधारणा:

- किसी शब्द का अर्थ उसके साथ दिए उदाहरण और प्रसंग से निश्चित होता है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें लेखक कहता है कि चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है। उसी तरह बाजार का आकर्षण भी हर व्यक्ति पर समान रूप से काम नहीं करता। इस तुलना में मर्यादा का अर्थ प्रभाव की सीमा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) केवल असर कहता है, उसकी सीमा नहीं बताता। (C) रूप के समान होने का कथन अर्थ से असंबद्ध है। (D) निश्चित प्रभाव भी सीमा की बात को उतनी स्पष्टता से व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है—प्रभाव की सीमा।

त्वरित सुझाव: चुंबक और लोहे की तुलना में केवल शब्द पर ध्यान दें; वह जादू की सीमा स्पष्ट करता है।

5(iii). बाजार का असर कब अधिक होता है ? [1 अंक]

(A) जेब और मन खाली होने पर

(B) जेब और मन भरे होने पर

(C) जेब भरी और मन खाली होने पर

(D) जेब खाली और मन भरे होने पर

सही उत्तर: (C) जेब भरी और मन खाली होने पर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश की स्पष्ट शर्त और उसके परिणाम को साथ पढ़ना चाहिए।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में कहा गया है कि जेब भरी हो और मन खाली हो तो जादू का असर खूब होता है। धन उपलब्ध होने और आवश्यकताओं के स्पष्ट न होने से व्यक्ति आकर्षक वस्तुओं की ओर अधिक खिंचता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में जेब खाली है, जिससे खरीदने की सामर्थ्य घटती है। (B) और (D) में मन भरा है, इसलिए वस्तुओं का निमंत्रण उतना प्रभावी नहीं होता। केवल (C) दोनों अपेक्षित शर्तें पूरी करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है—जेब भरी और मन खाली होने पर।

त्वरित सुझाव: जेब और मन की दो शर्तें साथ मिलाएँ: भरी जेब और खाली मन ही गद्यांश का सीधा उत्तर है।

5(iv). मन खाली और जेब भरी होने पर बाजार का प्रभाव कैसा होता है ? [1 अंक]

(A) सहयोगी

(B) उपहासक

(C) मर्यादित

(D) विनाशक

सही उत्तर: (D) विनाशक

हल:

अवधारणा:

- मन का खाली होना अपनी आवश्यकताओं के प्रति स्पष्टता के अभाव को दर्शाता है।
- सही विकल्प वही होगा जो प्रश्न के विशिष्ट शब्द और दिए गए प्रसंग का पूरा आशय व्यक्त करे।

चरण 1: निर्णायक आधार पहचानें भरी जेब और खाली मन वाला व्यक्ति बाजार के रूप-आकर्षण में सभी वस्तुओं को जरूरी मानने लगता है। उसकी खरीद पर संयम नहीं रहता और धन अनावश्यक सामान में खर्च होता है। इस हानिकारक प्रभाव को विनाशक कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) सहयोगी प्रभाव विवेकपूर्ण आवश्यकता-पूर्ति में होता है। (B) उपहासक का अर्थ मजाक करने वाला है, जो यहाँ नहीं है। (C) मर्यादित प्रभाव भी अनुपयुक्त है, क्योंकि इसी दशा में जादू का असर खूब होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है—विनाशक।

त्वरित सुझाव: सभी चीजें खरीदने की चाह को अनावश्यक खर्च से जोड़ें; इससे विनाशक प्रभाव स्पष्ट होता है।

5(v). बाजार का सभी सामान उपयोगी लगने के क्या कारण हो सकते हैं ? [1 अंक]

(A) जादू का असर

(B) सामान की कमी

(C) सब कुछ खरीदने की इच्छा

(D) संतुलित मन के कारण

सही उत्तर: (A) जादू का असर

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का रूप-जादू और मन की रिक्तता
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान गद्यांश में स्पष्ट है कि सभी सामान जरूरी और आराम बढ़ाने वाला मालूम होना बाज़ार के जादू का असर है। मन में निश्चित आवश्यकता न होने पर आकर्षक वस्तुएँ उपयोगी प्रतीत होती हैं।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन खाली मन वस्तुओं का निमंत्रण स्वीकार करता है और भरी जेब खरीदने की इच्छा को बल देती है। इसलिए उपयोगिता का यह आभास वास्तविक जरूरत से नहीं, रूप के आकर्षण से बनता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (B) सामान की कमी का उल्लेख कारण के रूप में नहीं है। (C) सब कुछ खरीदने की इच्छा इसी प्रभाव का परिणाम है। (D) संतुलित मन अनावश्यक खरीद से बचाता है, अतः वह कारण नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) जादू का असर है।

त्वरित सुझाव: कारण और परिणाम अलग रखें; गद्यांश की अंतिम पंक्ति सीधे सही कारण बताती है।

6(i). यशोधर बाबू अपने जीवन में किससे प्रभावित थे ? [1 अंक]

(A) कृष्णानंद पांडेय

(B) कृष्णानंद वर्मा

(C) कृष्णानंद शर्मा

(D) कृष्णानंद गुप्ता

सही उत्तर: (A) कृष्णानंद पांडेय

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू पर किशनदा का प्रभाव
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान यशोधर बाबू अपने जीवन में कृष्णानंद पांडेय से प्रभावित थे। पाठ में वे किशनदा के नाम से परिचित हैं और यशोधर बाबू के जीवन में मार्गदर्शक का स्थान रखते हैं।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन यशोधर बाबू के रहन-सहन, सामाजिक व्यवहार और पुराने मूल्यों के प्रति लगाव पर किशनदा का प्रभाव दिखाई देता है। उनके विचारों को समझने के लिए इस संबंध को याद रखना आवश्यक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (B) कृष्णानंद वर्मा, (C) कृष्णानंद शर्मा और (D) कृष्णानंद गुप्ता पाठ में इस मार्गदर्शक के नाम नहीं हैं। समान प्रथम नाम देखकर उपनाम की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) कृष्णानंद पांडेय है।

त्वरित सुझाव: किशनदा का पूरा नाम कृष्णानंद पांडेय याद रखें; विकल्पों में अंतर उपनाम का है।

6(ii). 'जूझ' कहानी के नायक का मन किसके लिए तरसता था ? [1 अंक]

(A) भोजन के लिए

(B) पढ़ने के लिए

(C) कपड़े के लिए

(D) खेलने के लिए

सही उत्तर: (B) पढ़ने के लिए

हल:

अवधारणा:

- लेखक की शिक्षा पाने की उत्कंठा
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान जूझ का नायक पढ़ने के लिए तरसता था। खेती के काम और पारिवारिक बाधाओं के कारण उसकी पढ़ाई रुक गई थी, किंतु विद्यालय लौटने की उसकी इच्छा प्रबल बनी रही।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन वह शिक्षा को अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों से निकलने का साधन मानता है। पढ़ाई जारी रखने के लिए किया गया संघर्ष ही पाठ के शीर्षक और कथ्य को स्पष्ट करता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) भोजन, (C) कपड़े और (D) खेलना यहाँ उसकी केंद्रीय आकांक्षा नहीं हैं। इन सामान्य जरूरतों के स्थान पर प्रश्न उस विशेष लालसा को पूछता है जिसके लिए नायक संघर्ष करता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (B) पढ़ने के लिए है।

त्वरित सुझाव: जूझ के केंद्रीय संघर्ष को शिक्षा पाने की इच्छा से जोड़कर सही विकल्प चुनें।

6(iii). सिंधु घाटी सभ्यता की संस्कृति को आप किस श्रेणी में रखेंगे ? [1 अंक]

(A) खेतिहर संस्कृति

(B) मैदानी संस्कृति

(C) नभ संस्कृति

(D) शहरी संस्कृति

सही उत्तर: (D) शहरी संस्कृति

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता का नगरीय स्वरूप
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान सिंधु घाटी सभ्यता की संस्कृति शहरी संस्कृति थी। मुअनजो-दड़ो की सुनियोजित बसावट, व्यवस्थित सड़कें, मकान और जलनिकास इसकी विकसित नगर-व्यवस्था के प्रमाण हैं।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन नगर में सार्वजनिक स्नानागार, कुएँ और नागरिक सुविधाएँ मिलती हैं। पाठ इन अवशेषों के माध्यम से समाज की सुव्यवस्थित शहरी जीवन-पद्धति का परिचय देता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) खेतिहर संस्कृति कहना उसके पूरे नगरीय स्वरूप को नहीं बताता। (B) मैदानी संस्कृति केवल भू-आकृति का संकेत है। (C) नभ संस्कृति इस ऐतिहासिक सभ्यता की श्रेणी नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) शहरी संस्कृति है।

त्वरित सुझाव: सभ्यता की श्रेणी तय करते समय सड़क, जलनिकास और नगर-योजना के प्रमाण देखें।

6(iv). मुअनजो-दड़ो सबसे बड़ा शहर है – [1 अंक]

(A) ताम्रकाल के शहरों में

(B) स्वर्णकाल के शहरों में

(C) पाषाणकाल के शहरों में

(D) रजतकाल के शहरों में

सही उत्तर: (A) ताम्रकाल के शहरों में

हल:

अवधारणा:

- मुअनजो-दड़ो का ऐतिहासिक काल
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान पाठ में मुअनजो-दड़ो को ताम्रकाल के शहरों में सबसे बड़ा शहर बताया गया है। प्रश्न उसी ऐतिहासिक परिचय की पहचान कराता है, इसलिए पाठ में प्रयुक्त काल-संज्ञा चुननी चाहिए।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन यहाँ सबसे बड़ा होने का कथन किसी भी युग के सभी नगरों के लिए नहीं है। उसकी तुलना ताम्रकालीन नगरों के समूह में की गई है; उत्तर में यह सीमा बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (B) स्वर्णकाल और (D) रजतकाल पाठ में दी गई इस तुलना के काल नहीं हैं। (C) पाषाणकाल भी गलत है, क्योंकि प्रश्न का संदर्भ ताम्रकालीन नगर से संबंधित है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) ताम्रकाल के शहरों में है।

त्वरित सुझाव: सबसे बड़ा के साथ दी गई तुलना की सीमा पहचानें; यहाँ पाठ की संज्ञा ताम्रकाल है।

6(ix). 'जूझ' पाठ के लेखक को अकेला रहना क्यों अच्छा लगने लगा ? [1 अंक]

(A) कविता लिखने में रुचि जगने से

(B) कविताओं के साथ खेलने से

(C) कविता के अर्थ को समझने से

(D) कविता पर विचार करने से

सही उत्तर: (A) कविता लिखने में रुचि जगने से

हल:

अवधारणा:

- काव्य-रचना में रुचि और एकांत
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान लेखक को अकेला रहना इसलिए अच्छा लगने लगा कि उसमें कविता लिखने की रुचि जाग उठी थी। शिक्षक द्वारा कविता पढ़ाए जाने के अनुभव ने उसके भीतर रचनात्मक चेतना जगाई।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन एकांत में वह अपनी अनुभूतियों को शब्दों में ढालने और कविता रचने का अभ्यास कर सकता था। इसलिए अकेलापन अब उसे नीरस नहीं, अपनी रचनात्मक गतिविधि के लिए अनुकूल लगता था।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (B) कविताओं के साथ खेलना, (C) अर्थ समझना और (D) कविता पर विचार करना संबंधित गतिविधियाँ हो सकती हैं, लेकिन अकेले रहने की रुचि का मूल कारण काव्य-लेखन की नई लगन है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) कविता लिखने में रुचि जगने से है।

त्वरित सुझाव: कविता समझने और स्वयं कविता रचने के बीच अंतर करें; एकांत की चाह रचना से जुड़ी है।

6(v). यशोधर बाबू को आप किस प्रकार के व्यक्ति की श्रेणी में रखेंगे ? [1 अंक]

(A) साधारण

(B) आदर्शवादी

(C) पुरातनपंथी

(D) विरोधी

सही उत्तर: (C) पुरातनपंथी

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू और पुरानी जीवन-दृष्टि
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान यशोधर बाबू को पुरातनपंथी व्यक्ति की श्रेणी में रखा जा सकता है। वे पुराने संस्कारों, परिचित जीवन-पद्धति और किशनदा से मिले मूल्यों से गहराई से जुड़े हुए हैं।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन नई पीढ़ी का रहन-सहन, आधुनिक उपभोग और परिवार की बदलती सोच उन्हें सहज नहीं लगती। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ का आधुनिक ढंग से मनाया जाना भी उनके भीतर असहजता पैदा करता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) साधारण बहुत व्यापक परिचय है। (B) आदर्शवादी उनके कुछ गुणों का संकेत हो सकता है, पर प्रश्न में पुरानी परंपराओं से लगाव निर्णायक है। (D) विरोधी कहना उनके पूरे स्वभाव को स्पष्ट नहीं करता।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) पुरातनपंथी है।

त्वरित सुझाव: पीढ़ियों के अंतर और पुराने संस्कारों से यशोधर बाबू के लगाव को आधार बनाकर विकल्प चुनें।

6(vi). बसंत पाटिल को लेखक द्वारा अपना दोस्त बनाने के कारणों में से कौन सा कारण सही नहीं है ? [1 अंक]

(A) होशियार छात्र होना

(B) शांत स्वभाव का होना

(C) कक्षा का मॉनिटर होना

(D) बड़े घर का होना

सही उत्तर: (D) बड़े घर का होना

हल:

अवधारणा:

- बसंत पाटिल से मित्रता के वास्तविक आधार
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान प्रश्न सही नहीं होने वाला कारण पूछता है। बसंत पाटिल का बड़े घर का होना लेखक की उससे मित्रता का कारण नहीं बताया गया है; लेखक उसकी व्यक्तिगत और शैक्षिक विशेषताओं से प्रभावित था।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन बसंत होशियार छात्र, शांत स्वभाव का लड़का और कक्षा का मॉनिटर था। उसकी पढ़ाई में लगन तथा अनुशासित व्यवहार लेखक के लिए आकर्षक और उपयोगी थे। इन गुणों ने मित्रता का आधार बनाया।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच इसलिए (A) होशियार छात्र होना, (B) शांत स्वभाव और (C) मॉनिटर होना वास्तविक कारण हैं और नकारात्मक प्रश्न के उत्तर नहीं बनते। (D) आर्थिक-सामाजिक प्रतिष्ठा का कथन असंगत है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) बड़े घर का होना है।

त्वरित सुझाव: सही नहीं है शब्द रेखांकित करें; वास्तविक तीन गुण हटाने पर असंगत कारण बचेगा।

6(vii). निम्नलिखित में से किस बात से यह पता चलता है कि मुअनजो-दड़ो के लोग बारीक कशीदाकारी करते थे ? [1 अंक]

(A) सूई मिलने से

(B) दुशाला मिलने से

(C) सूती कपड़ा मिलने से

(D) (a) और (b) दोनों

सही उत्तर: (D) (a) और (b) दोनों

हल:

अवधारणा:

- कशीदाकारी के पुरातात्त्विक प्रमाण
- पाठ के प्रसंग और विकल्पों के अर्थ का मिलान करके सर्वाधिक सटीक उत्तर चुनना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग की पहचान मुअनजो-दड़ो में सूई मिलने और दुशाले के चित्रण से वहाँ की बारीक कशीदाकारी का परिचय मिलता है। पाठ में मूर्ति के दुशाले पर दिखाई देने वाले अलंकरण से वस्त्र-सज्जा के कौशल का संकेत मिलता है।

चरण 2: पाठ के आधार पर विवेचन सूई सिलाई और महीन काम के औजार का प्रमाण है। दुशाले का सजावटी रूप उस कौशल के कलात्मक प्रयोग को सामने लाता है। अतः दोनों प्रमाणों को मिलाकर उत्तर निर्धारित किया जाता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच (A) और (B) अलग-अलग केवल एक प्रमाण देते हैं, जबकि दोनों का संयुक्त विकल्प उपलब्ध है। (C) सूती कपड़ा वस्त्र-निर्माण बताता है; अकेले उससे बारीक कशीदाकारी सिद्ध नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है; सूई तथा दुशाले के संयुक्त प्रमाण से कशीदाकारी का पता चलता है।

त्वरित सुझाव: औजार के प्रमाण और वस्त्र के अलंकरण को साथ देखें; संयुक्त विकल्प दोनों को समेटता है।

6(viii). मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा के रहस्य आज भी रहस्य क्यों बने हुए हैं ? [1 अंक]

(A) भव्यता के आडंबर से

(B) अध्ययन नहीं हो पाने से

(C) अनबूझ लिपि के कारण

(D) सुघड़ता के अभाव के कारण

सही उत्तर: (C) अनबूझ लिपि के कारण

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष जीवन के भौतिक पक्ष की जानकारी देते हैं; लिखित अभिलेखों का अर्थ जानने के लिए लिपि पढ़ पाना आवश्यक है।
- पाठ में सिंधु सभ्यता की अनबूझ लिपि उसके अनेक रहस्यों के अनसुलझे रहने का कारण है।

चरण 1: निर्णायक कारण पहचानें मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा से मिली मुहरों और अन्य वस्तुओं पर अंकित लिपि अभी पढ़ी नहीं जा सकी है। इसलिए उनके अभिलेखों से उस सभ्यता के जीवन और व्यवस्था का पूरा अर्थ नहीं खुलता। यह सीधे विकल्प (C) का समर्थन करता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की जाँच (A) में भव्यता का आडंबर बताया गया है, जबकि पाठ इस सभ्यता की सादगी और सुघड़ता की चर्चा करता है। (B) गलत है क्योंकि खुदाई तथा अध्ययन हुए हैं। (D) भी गलत है क्योंकि नगर-योजना में सुघड़ता का अभाव नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: अनबूझ लिपि के कारण।

त्वरित सुझाव: रहस्यों के अनसुलझे होने को नगर की बनावट से नहीं, अभिलेख पढ़ पाने की समस्या से जोड़ें।

6(x). मास्टर की चाल पर दूसरी कविताएँ भी पढ़ी जा सकती हैं – कथन में प्रयुक्त 'चाल' शब्द का अर्थ हो सकता है – [1 अंक]

(A) रुकने एवं आगे बढ़ने का नियम

(B) भाव-भंगिमा और गाने का ढंग

(C) अभिनय करने का ढंग

(D) कविता लेखन करने का ढंग

सही उत्तर: (B) भाव-भंगिमा और गाने का ढंग

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके प्रसंग से निर्धारित होता है; यहाँ प्रसंग कविता के सस्वर पाठ का है।
- मास्टर की कविता पढ़ने की भावपूर्ण शैली बालक को दूसरी कविताएँ उसी ढंग से पढ़ने की प्रेरणा देती है।

चरण 1: कविता-पाठ का प्रसंग समझें मास्टर कविता को भाव के अनुरूप स्वर और लय के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी शैली अपनाकर दूसरी कविताएँ भी पढ़ी जा सकती हैं। इसलिए यहाँ चाल का अर्थ भाव-भंगिमा और गाने का ढंग है, जो विकल्प (B) में दिया गया है।

चरण 2: अन्य अर्थों को अलग करें (A) रुकने और आगे बढ़ने के सामान्य नियम तक सीमित है; वह कविता की भावपूर्ण प्रस्तुति का पूरा अर्थ नहीं देता। (C) केवल अभिनय की विधि बताता है। (D) कविता रचने की विधि है, जबकि कथन कविता पढ़ने के बारे में है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: भाव-भंगिमा और गाने का ढंग।

त्वरित सुझाव: चाल का अर्थ चुनते समय कथन के पढ़ी जा सकती हैं शब्दों को आधार बनाएँ; प्रसंग कविता-पाठ है।

7(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी और नाटक दोनों कथात्मक साहित्यिक विधाएँ हैं; उनमें मानवीय जीवन का सृजनात्मक निरूपण होता है।
- तुलना में साझा तत्त्व बताने हैं: कथानक, पात्र, परिवेश, संवाद, संघर्ष और उद्देश्य।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा बनाएँ पहले दोनों विधाओं का साझा आधार कथावस्तु और पात्र बताएँ। फिर समय, स्थान और सामाजिक परिवेश की भूमिका समझाएँ। अंत में संवाद, संघर्ष तथा जीवन-सत्य को जोड़ें। कहानी का वर्णनात्मक होना और नाटक का मंचीय होना भिन्नताएँ हैं; समानताओं के उत्तर में इन्हीं पर विस्तार करने से मुख्य विषय छूट जाएगा। कथानक घटनाओं को अर्थपूर्ण क्रम देता है और पात्र उन्हीं घटनाओं में सक्रिय रहते हैं। परिवेश उनके व्यवहार को समझने की पृष्ठभूमि बनाता है। संघर्ष केवल बाहरी झगड़ा नहीं, पात्र के मन की दुविधा भी हो सकता है। इस प्रकार दोनों विधाएँ मानव-अनुभव को एक संगठित रचना में बदलती हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी और नाटक दोनों में कथानक, पात्र, संवाद, देशकाल और उद्देश्य होते हैं। दोनों मानवीय जीवन, संबंधों और भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। घटनाओं का क्रम तथा पात्रों के बीच संघर्ष कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं। पात्रों के व्यवहार और संवाद से उनका चरित्र उभरता है। दोनों रचनाएँ पाठक या दर्शक में संवेदना जगाती हैं और जीवन के किसी सत्य को व्यक्त करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दोनों विधाओं की समानता उनके कथात्मक तत्त्वों और जीवन के संवेदनात्मक चित्रण में है।

त्वरित सुझाव: समानताएँ पूछे जाने पर साझा तत्त्वों को क्रम से लिखें; मंच और वर्णन के अंतर पर उत्तर केंद्रित न करें।

7(ख). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

रेडियो नाटक और सिनेमा में क्या भिन्नता होती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम है।
- माध्यम का अंतर संवाद, ध्वनि, दृश्य और श्रोता या दर्शक की कल्पना की भूमिका को बदल देता है।

चरण 1: तुलना का आधार तय करें उत्तर में पहले श्रव्य और दृश्य-श्रव्य माध्यम का अंतर स्पष्ट करें। फिर बताएँ कि रेडियो में दृश्य दिखाई नहीं देने से संवाद, स्वर और ध्वनि-संकेतों पर अधिक निर्भरता होती है। सिनेमा में कैमरा, अभिनय तथा दृश्य-संयोजन यह काम भी करते हैं। दोनों में ध्वनि हो सकती है; इसलिए सिनेमा को केवल दृश्य माध्यम कहना सही नहीं होगा। उदाहरण के लिए किसी पात्र के आने का संकेत रेडियो में कदमों की आहट, दरवाजे की ध्वनि या दूसरे पात्र के संवाद से दिया जा सकता है। सिनेमा में उसी प्रवेश को सीधे दिखाया जा सकता है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि रेडियो-लेखक को श्रव्य संकेत चुनने में विशेष सावधानी क्यों चाहिए।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक केवल श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम है। रेडियो में पात्रों, स्थान और घटनाओं का बोध संवाद, स्वर, संगीत तथा ध्वनि-प्रभावों से कराया जाता है। श्रोता इनके सहारे दृश्य की कल्पना करता है। सिनेमा में दृश्य, वेशभूषा, हावभाव और कैमरे की सहायता से भी कथा प्रस्तुत होती है; इसलिए हर दृश्य-सूचना को संवाद में बताना आवश्यक नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष मुख्य भिन्नता यह है कि रेडियो कथा को सुनाता है और सिनेमा उसे ध्वनि के साथ दिखाता भी है।

त्वरित सुझाव: तुलना को माध्यम, प्रस्तुति के साधन और कल्पना की भूमिका के क्रम में रखें।

7(ग). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

क्या नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन की कोई तकनीक हो सकती है ? इन्हें लिखते समय क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन अनुभव, कल्पना, विचार और भाषा की सृजनात्मक स्वतंत्रता पर आधारित होता है।
- कोई बँधा हुआ यांत्रिक सूत्र नहीं है; विचारों का चयन और क्रमबद्ध विकास लेखन को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: प्रश्न के दोनों पक्ष पहचानें उत्तर में पहले स्पष्ट करें कि रचनात्मकता की कोई निश्चित तकनीक नहीं होती, फिर उपयोगी तैयारी बताएँ। विषय से जुड़े अनुभव, दृश्य और विचार जुटाकर केंद्रीय भाव चुनना सहायक है। सावधानियों में विषय से जुड़े रहना, मौलिकता, सहज भाषा और विचारों का तारतम्य शामिल करें। केवल तकनीक का निषेध कर देना प्रश्न के दूसरे पक्ष का उत्तर नहीं होगा। विचार जुटाने के बाद उनकी प्रासंगिकता जाँचना आवश्यक है। आकर्षक लगने वाली हर बात विषय के अनुकूल नहीं होती। आरंभ पाठक की जिज्ञासा जगाए, बीच का भाग मुख्य भाव विकसित करे और अंत उसे सार्थक रूप दे। मौलिकता का अर्थ कठिन शब्दों का प्रदर्शन करना नहीं, अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करना है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन की कोई निश्चित तकनीक नहीं होती। लेखक अपने अनुभव, कल्पना और स्वतंत्र चिंतन से सामग्री जुटाता है। पहले विषय से जुड़े विचार लिखकर उनका क्रम तय करना उपयोगी है। लिखते समय विषय से भटकने, घिसे-पिटे कथनों और अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। भाषा सहज हो, विचार मौलिक हों तथा पूरे लेख में तारतम्य और रोचकता बनी रहे।

चरण 3: निष्कर्ष निश्चित सूत्र के स्थान पर स्वतंत्र चिंतन और सुव्यवस्थित, विषयानुकूल अभिव्यक्ति अपनानी चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले केंद्रीय विचार चुनें, फिर उससे जुड़े अनुभवों को क्रम दें और असंबद्ध बातों को हटा दें।

8(क). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

त्योहारों पर बाजार की चहल-पहल

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े दृश्यों, अनुभवों और विचारों को प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। भूमिका, विषय-विस्तार और सार्थक समापन से लेख को एक सूत्र में बाँधना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय के मुख्य पक्ष चुनना आवश्यक है। भाषा स्वाभाविक, विचार क्रमबद्ध और शीर्षक विषय के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा पहले उपयुक्त शीर्षक लिखें। भूमिका में त्योहार के आगमन का वातावरण बनाएँ। फिर बाजार की सजावट, दुकानों की विविधता, ग्राहकों की भीड़ और छोटे दुकानदारों की आशाओं को उभारें। अंत में स्थानीय उत्पादों की खरीद और संयम का संदेश दें।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति दृश्य, ध्वनि और गंध से संबंधित शब्द लेख को सजीव बनाते हैं। केवल वस्तुओं की सूची देने के स्थान पर लोगों की गतिविधियों और भावनाओं को भी दिखाएँ। नीचे दिया गया आदर्श लेख प्रश्न की निर्धारित शब्द-सीमा के लगभग अनुरूप है। शीर्षक के बाद लेख का मुख्य पाठ प्रस्तुत है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **त्योहारों पर बाजार की चहल-पहल**

त्योहार आते ही बाजार रंगों, रोशनियों और खुशियों से भर उठते हैं। दुकानों पर लटकती झालरें मानो ग्राहकों को निमंत्रण देती हैं। कहीं रंग-बिरंगी मिठाइयाँ सजी हैं, तो कहीं कपड़ों और खिलौनों की दुकानों पर भीड़ उमड़ रही है। बच्चों की उत्सुक आँखें हर नई वस्तु पर ठहर जाती हैं। दुकानदारों की पुकार, ग्राहकों की बातचीत और मोलभाव से पूरा वातावरण जीवंत हो उठता है। फूलों की सुगंध और पकवानों की

महक मन को लुभाती है। छोटे दुकानदार भी अच्छी बिक्री की आशा में प्रसन्न दिखाई देते हैं। यह चहल-पहल केवल खरीदारी नहीं, हमारी साझा संस्कृति और आपसी मेलजोल का उत्सव है। फिर भी हमें अनावश्यक खर्च से बचते हुए स्थानीय कारीगरों का सामान खरीदना चाहिए, ताकि त्योहार की खुशी उनके घर भी पहुँचे।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार लेख बाजार की उत्सवपूर्ण हलचल का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हुए संवेदनशील खरीदारी का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और समापन तय करें; अंतिम पंक्ति को सीधे विषय के केंद्रीय विचार से जोड़ें।

8(ख). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत का बढ़ता कद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े दृश्यों, अनुभवों और विचारों को प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। भूमिका, विषय-विस्तार और सार्थक समापन से लेख को एक सूत्र में बाँधना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय के मुख्य पक्ष चुनना आवश्यक है। भाषा स्वाभाविक, विचार क्रमबद्ध और शीर्षक विषय के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा पहले उपयुक्त शीर्षक लिखें। भूमिका में विश्व में भारत की बढ़ती भूमिका का उल्लेख करें। इसके बाद विज्ञान, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और मानवीय सहयोग के पक्ष जोड़ें। अंत में वैश्विक सम्मान को देश के समावेशी विकास और जिम्मेदारी से जोड़ें।

चरण 2: भाषा और प्रस्तुति आत्मविश्वासपूर्ण किंतु संतुलित भाषा अपनाएँ। अप्रमाणित आँकड़ों और अतिशयोक्ति से बचें। उपलब्धियों के साथ नागरिक कल्याण तथा विश्वशांति की जिम्मेदारी भी स्पष्ट करें। नीचे दिया गया आदर्श लेख प्रश्न की निर्धारित शब्द-सीमा के लगभग अनुरूप है। शीर्षक के बाद लेख का मुख्य पाठ प्रस्तुत है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श लेख **अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत का बढ़ता कद**

आज भारत अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रख रहा है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अनुसंधान में उसकी उपलब्धियाँ नई पहचान बना रही हैं। भारतीय वैज्ञानिकों, उद्यमियों और युवाओं की प्रतिभा विश्व को प्रभावित कर रही है। योग और भारतीय संस्कृति ने भी विभिन्न देशों के लोगों को जोड़ा है। संकट के समय सहायता पहुँचाकर भारत ने मानवीय सहयोग का परिचय दिया है। उसकी विशाल अर्थव्यवस्था और लोकतांत्रिक परंपरा वैश्विक चर्चाओं में उसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाती हैं। फिर भी बढ़ते सम्मान के साथ जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता और पर्यावरण संरक्षण में निरंतर सुधार आवश्यक है। विश्व में भारत का वास्तविक कद तभी ऊँचा होगा, जब उसकी प्रगति का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और वह शांति तथा सहयोग की राह पर बढ़ता रहे।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार लेख भारत की उपलब्धियों और बढ़ती वैश्विक भूमिका को जिम्मेदारी तथा समावेशी विकास के विचार से जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: लेख लिखने से पहले भूमिका, तीन मुख्य बिंदु और समापन तय करें; अंतिम पंक्ति को सीधे विषय के केंद्रीय विचार से जोड़ें।

8(ग). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

पकी फसल से लहलहाता खेत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के अनुरूप दृश्य, अनुभूति और विचार का स्वाभाविक संयोजन किया जाता है। भाषा सरल, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ, विस्तार और समापन का संतुलन रखें। अनावश्यक भूमिका, तथ्यहीन आँकड़ों और विषय से भटकते विवरण से बचें।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा इस विषय पर शीर्षक सहित संक्षिप्त रचनात्मक लेख लिखना है। इसमें पत्र का पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं आएँगे। मुख्य भाव होगा—खेत का दृश्य, किसान का श्रम और अन्न के प्रति सम्मान। आरंभ सीधे दृश्य या घटना से होगा और अंत उससे उपजी सार्थक अनुभूति से किया जाएगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना सुनहरी बालियाँ, मंद हवा, मिट्टी की सुगंध और किसान की प्रसन्नता से दृश्य को सजीव बनाएँ। वर्णन को केवल रंगों तक सीमित न रखकर अन्न उपजाने वाले श्रम से जोड़ें। वाक्यों का क्रम ऐसा रखें कि पाठक को दृश्य बदलता हुआ महसूस हो। एक ही बात को बार-बार दोहराने के स्थान पर प्रत्येक वाक्य से नया विवरण या भाव जोड़ें। अंतिम लेख में यही योजना लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत की गई है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **पकी फसल से लहलहाता खेत**

सुबह की हल्की धूप में पकी फसल से लहलहाता खेत सोने की चादर-सा चमक रहा था। हवा चलती तो गेहूँ की बालियाँ एक साथ झूम उठतीं, मानो धरती खुशी से नाच रही हो। मेड़ पर खड़ा किसान अपनी मेहनत का फल देखकर मुसकरा रहा था। इन्हीं खेतों में उसने कड़ाके की ठंड में सिंचाई की थी और फसल को बचाने के लिए रातें जागकर बिताई थीं। आज हर भरी बाली उसके परिश्रम की कहानी कह रही थी। पास के पेड़ पर बैठी चिड़ियाँ चहक रही थीं। मिट्टी की सोंधी गंध मन को आनंद से भर रही थी। यह दृश्य सुंदरता के साथ आशा और जीवन का भी प्रतीक था। लगा, हमारी थाली का प्रत्येक दाना किसान के श्रम का अनमोल उपहार है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख विषय के अनुरूप दृश्यात्मक प्रस्तुति, भावपूर्ण भाषा और स्पष्ट समापन के साथ लिखा गया है। शीर्षक से अंतिम वाक्य तक केंद्रीय भाव की एकता बनी रहती है।

त्वरित सुझाव: पहले दृश्य या घटना के तीन प्रमुख बिंदु चुनें; फिर उन्हें क्रम में जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सजीव लेख लिखें।

8(घ). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

नदी में अचानक पानी का बढ़ना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के अनुरूप दृश्य, अनुभूति और विचार का स्वाभाविक संयोजन किया जाता है। भाषा सरल, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ, विस्तार और समापन का संतुलन रखें। अनावश्यक भूमिका, तथ्यहीन आँकड़ों और विषय से भटकते विवरण से बचें।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा इस विषय पर शीर्षक सहित संक्षिप्त रचनात्मक लेख लिखना है। इसमें पत्र का पता, संबोधन या हस्ताक्षर नहीं आएँगे। मुख्य भाव होगा—प्रकृति का बदलता रूप, लोगों की तत्परता और सामूहिक सहयोग। आरंभ सीधे दृश्य या घटना से होगा और अंत उससे उपजी सार्थक अनुभूति से किया जाएगा।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना शांत नदी से उफनती धारा तक घटना का क्रम रखें। लहरों की आवाज, बढ़ते जल और लोगों की गतिविधियों से तनाव उभारें। अंत में सहयोग से मिली सुरक्षा और सतर्कता का भाव आए। वाक्यों का क्रम ऐसा रखें कि पाठक को दृश्य

बदलता हुआ महसूस हो। एक ही बात को बार-बार दोहराने के स्थान पर प्रत्येक वाक्य से नया विवरण या भाव जोड़ें। अंतिम लेख में यही योजना लगभग 120 शब्दों में प्रस्तुत की गई है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **नदी में अचानक पानी का बढ़ना**

दोपहर तक नदी शांत बह रही थी। बच्चे किनारे खेल रहे थे और कुछ लोग घाट पर बैठे थे। अचानक पानी का रंग मटमैला होने लगा और धारा तेज हो गई। देखते ही देखते सीढ़ियाँ डूबने लगीं। ऊपर पहाड़ों में हुई भारी वर्षा का पानी यहाँ पहुँच गया था। लहरों की गर्जना सुनकर सब घबरा उठे। एक बुजुर्ग ने आवाज लगाई, "किनारा छोड़ो, ऊँचे स्थान पर चलो!" युवकों ने बच्चों और वृद्धों को सुरक्षित रास्ते से बाहर निकाला। थोड़ी देर में नदी किनारे की झोपड़ियों तक पहुँच गई। प्रशासन ने लोगों को दूर रहने की चेतावनी दी। सुरक्षित टीले पर खड़े हम नदी का विकराल रूप देख रहे थे। उस दिन समझ आया कि प्रकृति के संकेत पहचानना और संकट में मिलकर काम करना कितना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख विषय के अनुरूप दृश्यात्मक प्रस्तुति, भावपूर्ण भाषा और स्पष्ट समापन के साथ लिखा गया है। शीर्षक से अंतिम वाक्य तक केंद्रीय भाव की एकता बनी रहती है।

त्वरित सुझाव: पहले दृश्य या घटना के तीन प्रमुख बिंदु चुनें; फिर उन्हें क्रम में जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सजीव लेख लिखें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

इंटरनेट तेजी से लोकप्रिय क्यों हो रहा है ? किन्हीं चार कारणों का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट की लोकप्रियता का संबंध उसकी गति, सुलभता, बहुमाध्यमी प्रस्तुति और संवाद की सुविधा से है।
- प्रश्न में चार कारण माँगे गए हैं; इसलिए उत्तर में चार अलग विशेषताओं और उनके उपयोग को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा चार आधार चुनें: सूचना का तत्काल प्रसार, सुविधाजनक पहुँच, अनेक माध्यमों का एक साथ प्रयोग और पाठक की सक्रिय भागीदारी। गति और पहुँच को अलग समझें: पहली सूचना मिलने के समय से, दूसरी कहीं से भी उपयोग कर पाने से संबंधित है।

चरण 2: कारणों की स्पष्टता जाँचें इंटरनेट समाचार को अखबार के अगले अंक की प्रतीक्षा किए बिना पाठक तक पहुँचा देता है। बहुमाध्यमी प्रस्तुति का आशय केवल चित्र देखना नहीं, बल्कि पाठ के साथ ध्वनि और दृश्य का समन्वय है। संवादात्मकता में पाठक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं रहता; प्रतिक्रिया और सामग्री साझा करके संचार में भाग लेता है। इन अलग विशेषताओं को मिलाकर एक ही कारण न बनाएँ।

चरण 3: आदर्श उत्तर इंटरनेट की लोकप्रियता के चार प्रमुख कारण हैं। पहला, इस पर देश-विदेश की सूचनाएँ और समाचार तुरंत उपलब्ध होते हैं तथा लगातार अद्यतन किए जा सकते हैं। दूसरा, मोबाइल या कंप्यूटर द्वारा इसे कहीं से भी अपनी सुविधानुसार इस्तेमाल किया जा सकता है। तीसरा, इसमें लिखित सामग्री, चित्र, ध्वनि और वीडियो एक साथ मिलते हैं, जिससे प्रस्तुति आकर्षक बनती है। चौथा, यह संवादात्मक माध्यम है; उपयोगकर्ता अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं और सामग्री दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष तात्कालिकता, सुविधाजनक पहुँच, बहुमाध्यमी प्रस्तुति और संवादात्मकता इंटरनेट की तेजी से बढ़ती लोकप्रियता के चार प्रमुख कारण हैं।

त्वरित सुझाव: चार कारण माँगे जाएँ तो हर कारण को अलग वाक्य में उसके उपयोग सहित लिखें; केवल इंटरनेट की सामान्य प्रशंसा न करें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारीय साक्षात्कार और सामान्य बात-चीत का अंतर स्पष्ट करते हुए साक्षात्कारकर्ता के गुणों का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय साक्षात्कार किसी व्यक्ति से उद्देश्यपूर्ण प्रश्नों के माध्यम से पाठकों के लिए उपयोगी तथ्य, विचार और अनुभव प्राप्त करने की विधा है।
- सामान्य बातचीत का कोई निश्चित सार्वजनिक उद्देश्य होना आवश्यक नहीं, जबकि साक्षात्कार में विषय, तैयारी और प्रश्नों की दिशा महत्त्वपूर्ण होते हैं।

चरण 1: अंतर और गुणों की रूपरेखा बनाएँ उत्तर के पहले भाग में उद्देश्य और तैयारी के आधार पर अंतर बताएँ। दूसरे भाग में विषयज्ञान, प्रश्न पूछने की कुशलता, ध्यानपूर्वक सुनने की आदत तथा विनम्र निष्पक्ष व्यवहार जैसे गुण रखें। केवल सामान्य बातचीत की निंदा करना उचित नहीं; वह आत्मीय और सहज हो सकती है, किंतु उसमें जनहित की सूचना जुटाने की अनिवार्यता नहीं होती।

चरण 2: गुणों का साक्षात्कार से संबंध समझें तैयारी से प्रासंगिक प्रश्न बनते हैं। ध्यान से सुनने पर उत्तर से निकला आवश्यक पूरक प्रश्न पूछा जा सकता है। संवेदनशीलता और शिष्टता सामने वाले को खुलकर बोलने का विश्वास देती हैं। निष्पक्षता का अर्थ है कि पत्रकार अपने मनचाहे उत्तर थोपने के बजाय व्यक्ति की बात का आशय सही रूप में प्रस्तुत करे।

चरण 3: आदर्श उत्तर सामान्य बातचीत प्राय: सहज और अनौपचारिक होती है; उसमें विषय या उद्देश्य निश्चित होना आवश्यक नहीं। पत्रकारीय साक्षात्कार किसी व्यक्ति से महत्त्वपूर्ण तथ्य, विचार और अनुभव जानने के लिए किया गया योजनाबद्ध संवाद है, जिसका लाभ पाठकों या दर्शकों को मिलता है। साक्षात्कारकर्ता को विषय और व्यक्ति की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। उसे स्पष्ट, संक्षिप्त और प्रासंगिक प्रश्न पूछने चाहिए। वह धैर्यवान श्रोता, विनम्र, संवेदनशील तथा निष्पक्ष हो। उत्तर ध्यान से सुनकर उचित पूरक प्रश्न पूछना और मूल आशय सुरक्षित रखना भी आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष उद्देश्यपूर्ण तैयारी साक्षात्कार को सामान्य बातचीत से अलग करती है; जानकारी, श्रवणकौशल, प्रासंगिक प्रश्न और निष्पक्ष व्यवहार साक्षात्कारकर्ता के प्रमुख गुण हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में रखें: पहले बातचीत से अंतर, फिर साक्षात्कारकर्ता के गुण; गुणों को उसके काम से जोड़कर लिखें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

समाचार के इंट्रो और बॉडी से आप क्या समझते हैं ? मीडिया में इनका संबंध किससे है ? उसे क्या कहा जाता है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का आरंभिक अनुच्छेद इंट्रो कहलाता है; उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना संक्षेप में दी जाती है।
- बॉडी में आरंभिक सूचना का विस्तार, आवश्यक तथ्य और पृष्ठभूमि दी जाती है।

चरण 1: इंट्रो और बॉडी का अंतर इंट्रो पाठक को घटना की मुख्य जानकारी तुरंत देता है। उसमें घटना के सबसे आवश्यक पक्षों को प्राथमिकता मिलती है। बॉडी उन्हीं सूचनाओं को विस्तार देकर घटना की परिस्थितियाँ, कारण, विवरण और संबंधित कथन सामने रखती है। इसलिए दोनों अनुच्छेदों की भूमिकाएँ अलग होते हुए भी परस्पर जुड़ी होती हैं।

चरण 2: लेखन पद्धति की पहचान समाचार में सूचनाएँ सामान्यत: घटते हुए महत्त्व के क्रम में रखी जाती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात आरंभ में, उससे कम महत्त्व की बातें बीच में और गौण विवरण अंत में आते हैं। यह प्रस्तुति उलटा पिरामिड शैली कहलाती है। इसे समझाते समय इंट्रो और बॉडी को इसी शैली के अंग के रूप में जोड़ना चाहिए। इस क्रम से संपादक को समाचार के अंतिम गौण विवरण घटाने पर भी मुख्य सूचना सुरक्षित रखने में सुविधा होती है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार का इंट्रो उसका आरंभिक अनुच्छेद है, जिसमें घटना की सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी संक्षेप में दी जाती है। बॉडी समाचार का विस्तृत भाग है। इसमें इंट्रो में दी गई जानकारी का विस्तार, घटना की पृष्ठभूमि, कारण तथा अन्य

आवश्यक तथ्य प्रस्तुत होते हैं। मीडिया में इनका संबंध समाचार लिखने की उलटा पिरामिड शैली से है। इसमें पहले सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचना, फिर कम महत्त्वपूर्ण विवरण और अंत में गौण बातें रखी जाती हैं। इससे पाठक को मुख्य समाचार तुरंत मिल जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष इंट्रो समाचार का सार और बॉडी उसका विस्तार है; दोनों उलटा पिरामिड शैली के प्रमुख अंग हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दोनों शब्दों का अर्थ लिखिए, फिर घटते महत्त्व का क्रम बताकर उलटा पिरामिड शैली का नाम दीजिए।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ – 'आत्मपरिचय' कविता से ली गई इस पंक्ति के माध्यम से कवि की भावनाओं को स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में आत्मानुभूति, प्रेम और स्वतंत्र जीवन-दृष्टि का महत्त्व है।
- अपने मन का गान करने का अर्थ अपनी सच्ची अनुभूतियों को काव्य में व्यक्त करना है।

चरण 1: पंक्ति का आशय कवि अपने मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देता है। उसके गीत बाहरी दबाव या लोकप्रशंसा के लिए गढ़े गए शब्द नहीं हैं। उनमें उसके सुख-दुख, प्रेम और संवेदनशील हृदय की आवाज समाई है। इस प्रकार प्रस्तुत पंक्ति कविता की आत्मपरकता और कवि की सहज अभिव्यक्ति को सामने लाती है।

चरण 2: कवि के व्यक्तित्व से संबंध कवि संसार के साथ संबंध रखते हुए भी अपनी निजी भावभूमि बनाए रखता है। वह सांसारिक अपेक्षाओं के अनुसार अपना आंतरिक सत्य नहीं बदलता। उसकी काव्य-साधना में अनुभूतियों की ईमानदारी प्रमुख है। उत्तर में इसी भावात्मक स्वतंत्रता को समझाना चाहिए; इसे मनमानी या समाज के प्रति संवेदनहीनता नहीं कहना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में कवि अपनी सहज और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की भावना प्रकट करता है। वह लोकप्रशंसा के लिए नहीं, अपने मन की अनुभूतियों को स्वर देने के लिए गाता है। उसके गीतों में उसके सुख-दुख, प्रेम और अंतर्द्वंद्व व्यक्त होते हैं। संसार से जुड़ा होकर भी वह अपनी भावात्मक स्वतंत्रता बनाए रखता है। उसकी कविता उसके संवेदनशील हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति है।

चरण 4: निष्कर्ष पंक्ति कवि की आत्मानुभूति, भावात्मक स्वतंत्रता और मन की सच्ची अभिव्यक्ति को रेखांकित करती है।

त्वरित सुझाव: मन का गान को केवल गीत गाना न कहें; उसे निजी अनुभूति, प्रेम और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' – पंक्ति के संदर्भ में अपने क्षेत्र की शरदकालीन सुबह का वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-वर्णन में रंग, प्रकाश, स्पर्श और वातावरण के सजीव बिंब उपयोगी होते हैं।
- दिए गए बिंब में खरगोश की आँखों की लालिमा प्रातःकालीन आकाश की कोमल लालिमा का आधार है।

चरण 1: दिए गए बिंब को समझना खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा कहने से प्रातःकालीन लालिमा का चित्र उभरता है। प्रश्न में अपने क्षेत्र की शरदकालीन सुबह का वर्णन माँगा गया है, इसलिए इसी लालिमा को आधार बनाकर स्थानीय प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करना उचित है। वर्णन में केवल उपमा का अर्थ बताना पर्याप्त नहीं होगा; सुबह का सजीव वातावरण भी सामने आना चाहिए।

चरण 2: वर्णन की रूपरेखा उत्तर की शुरुआत पूरब के आकाश और उगते सूर्य की कोमल लालिमा से की जा सकती है। फिर शरद ऋतु

की हल्की ठंडक, स्वच्छ आकाश, घास पर ओस तथा पक्षियों की चहचहाहट को जोड़ना चाहिए। इन विवरणों से दृश्य और अनुभूति दोनों बनते हैं। भाषा सहज और चित्रात्मक रखें तथा असंबद्ध घटनाओं का विस्तार न करें।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मेरे क्षेत्र की शरदकालीन सुबह शांत और मनोहारी होती है। पूरब का आकाश खरगोश की आँखों जैसी कोमल लालिमा से भर उठता है। उगते सूर्य की किरणें पेड़ों की पत्तियों पर चमकती हैं। घास पर ओस की बूँदें मोतियों जैसी लगती हैं। हल्की ठंडी हवा ताजगी देती है। पक्षियों की चहचहाहट और स्वच्छ आकाश सुबह को सुंदर तथा जीवन से भरा बना देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष शरद की सुबह की विशेषता कोमल लालिमा, स्वच्छ वातावरण, हल्की ठंडक और ओस से सजी प्रकृति है।

त्वरित सुझाव: वर्णन को लालिमा से शुरू करके ओस, ठंडी हवा और पक्षियों तक ले जाएँ, ताकि सुबह का पूरा दृश्य बन सके।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
किसी के दुःख को बेचना कहाँ तक उचित है ? 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता मीडिया की उस संवेदनहीनता पर व्यंग्य करती है जिसमें पीड़ित व्यक्ति को कार्यक्रम की सामग्री बना दिया जाता है।
- मानवीय गरिमा का सम्मान सहायता और सहानुभूति में है; किसी की विवशता से मनोरंजन या लाभ कमाना उसका शोषण है।

चरण 1: कविता में प्रस्तुत व्यवहार समझें कार्यक्रम-संचालक अपाहिज व्यक्ति के दुःख को समझने के बजाय उसे कैमरे के सामने रुलाने का प्रयास करता है। वह दर्शकों में करुणा का दृश्य प्रभाव पैदा करना चाहता है। इस प्रकार व्यक्ति की निजी पीड़ा को उसकी इच्छा और आत्मसम्मान से अलग करके सार्वजनिक प्रदर्शन की वस्तु बना दिया जाता है।

चरण 2: नैतिक निर्णय को पाठ से जोड़ें कविता की आलोचना दुःख के बारे में जानकारी देने की नहीं, बल्कि दुःख को बेचने वाली दृष्टि की है। किसी पीड़ित की समस्या उठाने का उद्देश्य उसकी सहायता और समाज को संवेदनशील बनाना होना चाहिए। दर्शक जुटाने के लिए उसकी विवशता उभारना इस उद्देश्य को नष्ट करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर किसी के दुःख को बेचना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि इससे उसकी गरिमा और संवेदनाओं का अपमान होता है। कविता में संचालक अपाहिज को रुलाकर दर्शकों के लिए करुण दृश्य बनाना चाहता है। उसके लिए पीड़ित की सहायता से अधिक कार्यक्रम का प्रभाव महत्त्वपूर्ण है। कवि इस व्यावसायिक संवेदनहीनता का विरोध करके सच्ची सहानुभूति और मानवीय व्यवहार की आवश्यकता बताते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष अतः कवि दुःख के व्यापार के स्थान पर संवेदना और गरिमा के सम्मान का आग्रह करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संचालक द्वारा अपाहिज को रुलाने के प्रयास का उदाहरण देकर गरिमा और सहानुभूति की बात जोड़ें।

11(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भक्तिन की तुलना हनुमान जी से करने के कारणों को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के रेखाचित्र में भक्तिन की पहचान निःस्वार्थ सेवा, समर्पण और अटूट निष्ठा से होती है।
- हनुमान जी से तुलना का आधार स्वामी के प्रति अनन्य सेवाभाव है; यह रूप या शक्ति की समानता नहीं है।

चरण 1: तुलना का मूल गुण पहचानें हनुमान जी राम के अनन्य सेवक हैं। इसी प्रकार भक्तिन लेखिका की सेवा को अपना कर्तव्य

मानकर उनके सुख-दुःख से जुड़ जाती है। उसका संबंध केवल वेतन और काम तक सीमित नहीं रहता; उसमें आत्मीयता और गहरा समर्पण दिखाई देता है।

चरण 2: पाठ में निष्ठा का प्रमाण दें लेखिका के जेल जाने की संभावना होने पर भी भक्तिन साथ रहने और सेवा करने की चिंता करती है। परिस्थितियाँ कठिन हों तो भी वह लेखिका का साथ छोड़ना नहीं चाहती। उसकी तत्परता और एकनिष्ठता ही तुलना को सार्थक बनाती है। अतः उत्तर में सामान्य प्रशंसा के बजाय सेवाभाव का स्पष्ट आधार देना चाहिए। यह समर्पण उसके व्यक्तित्व की प्रधान विशेषता है और लेखिका के जीवन में उसके महत्त्व को स्पष्ट करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर भक्तिन की तुलना हनुमान जी से उसके अनन्य सेवाभाव, समर्पण और निष्ठा के कारण की गई है। जिस प्रकार हनुमान राम की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, उसी प्रकार भक्तिन लेखिका की सेवा में अपना जीवन लगा देती है। लेखिका के जेल जाने की संभावना पर भी वह साथ रहना चाहती है। उसका संबंध नौकरी से आगे आत्मीय बंधन बन जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः तुलना का आधार भक्तिन का अनन्य सेवाभाव और लेखिका के प्रति अटूट निष्ठा है।

त्वरित सुझाव: हनुमान जी की रामभक्ति और भक्तिन की लेखिका के प्रति निष्ठा को जोड़ते हुए जेल जाने की संभावना वाला प्रसंग दें।

11(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"काले मेघा पानी दे" पाठ में मेढक मंडली पर लोगों द्वारा सहेजे गए पानी को फेंकने को पानी की निर्मम बरबादी क्यों कहा गया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के पाठ में लेखक की तर्कशील दृष्टि और जीजी की लोकविश्वास पर आधारित दृष्टि का संवाद है।
- सूखे के समय कठिनाई से बचाए गए पानी का उपयोग जीवन की आवश्यकताओं के लिए होना चाहिए।

चरण 1: सूखे की परिस्थिति स्पष्ट करें वर्षा न होने से जल का अभाव है। पीने और रोजमर्रा की जरूरतों के लिए लोग बड़ी कठिनाई से थोड़ा-थोड़ा पानी जुटाकर सहेजते हैं। ऐसी स्थिति में पानी सामान्य उपभोग की वस्तु मात्र नहीं, जीवन बचाने वाला दुर्लभ संसाधन बन जाता है।

चरण 2: लेखक की आपत्ति का कारण बताएँ इंदर सेना अथवा मेढक मंडली के लड़कों पर पानी उड़ेलने को वर्षा बुलाने का उपाय माना जाता है। लेखक को पानी फेंकने और वर्षा होने के बीच कोई तार्किक संबंध नहीं दिखाई देता। इसलिए वह उपयोगी जल के इस अपव्यय का विरोध करता है। यह लेखक की दृष्टि है; पाठ में जीजी इसी कर्म को त्याग और दान की दृष्टि से भी समझाती हैं। लेखक के लिए पहले मनुष्य की वास्तविक जरूरत पूरी करना आवश्यक है, इसलिए उसकी आपत्ति संसाधन की रक्षा से जुड़ी है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर सूखे के कारण लोगों को पीने तक के पानी का संकट था। वे बड़ी कठिनाई से थोड़ा-थोड़ा पानी जुटाकर सहेजते थे। ऐसे में वर्षा कराने की आशा में मेढक मंडली पर वही पानी उड़ेलना लेखक को अनुचित लगता था। इससे जलसंकट घटता नहीं, बढ़ता था। पानी फेंकने से वर्षा होने का तार्किक आधार न होने के कारण इसे निर्मम बरबादी कहा गया है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः जलसंकट में सहेजे पानी का निष्फल अपव्यय ही लेखक की आपत्ति का आधार है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न का उत्तर लेखक की तर्कशील दृष्टि से दें और सूखे, सहेजे पानी तथा वर्षा के अंधविश्वास को आपस में जोड़ें।

11(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं" – कथन का भाव 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष के फूलों की अत्यंत कोमल प्रकृति का वर्णन है।
- भौंरे और पक्षी के दबाव की तुलना पुष्प की सुकुमारता का बोध कराती है; इसे वृक्ष की समग्र दुर्बलता न समझें।

चरण 1: कथन के प्रत्यक्ष अर्थ को समझें भौंरे आकार में छोटे होते हैं और उनके पैरों का स्पर्श बहुत हल्का होता है। शिरीष के फूल इतने नाजुक हैं कि इस हल्के दबाव को ही सह सकते हैं। पक्षियों के बैठने से पड़ने वाला अधिक भार उनकी कोमल बनावट के लिए असहनीय होगा।

चरण 2: भाव को पाठ की विशेषता से जोड़ें लेखक इस तुलना से शिरीष के फूलों की सुकुमार सुंदरता को सजीव करते हैं। फूलों की नाजुकता और कठिन गर्मी में भी पेड़ के खिले रहने की क्षमता अलग विशेषताएँ हैं। इसलिए कथन का आशय वृक्ष को कमजोर बताना नहीं, उसके पुष्पों के स्पर्श-संवेदनशील सौंदर्य को उभारना है। यहाँ कोमलता का चित्रण अतिशय प्रभावशाली है और पाठक फूलों की नाजुक बनावट की कल्पना सहजता से कर सकता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर इस कथन में शिरीष के फूलों की अत्यंत कोमलता और सुकुमारता व्यक्त हुई है। वे इतने नाजुक होते हैं कि केवल भौंरों के नन्हे पैरों का हल्का स्पर्श सह सकते हैं। पक्षियों के शरीर का अपेक्षाकृत अधिक भार उन्हें क्षति पहुँचा सकता है। लेखक ने इस तुलना द्वारा शिरीष के पुष्पों की कोमल बनावट, नाजुक सुंदरता और हल्के दबाव के प्रति संवेदनशीलता को उभारा है।

चरण 4: निष्कर्ष अत: कथन शिरीष के पुष्पों की असाधारण कोमलता का संकेत करता है।

त्वरित सुझाव: भौंरे के हल्के स्पर्श और पक्षी के अधिक भार का अंतर समझाएँ; उत्तर का केंद्र फूलों की सुकुमारता रखें।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

लुट्टन पहलवान ढोल को ही अपना गुरु क्यों मानता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लुट्टन का गुरु और प्रेरणा की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें लुट्टन का कुश्ती-कौशल किसी औपचारिक गुरु की शिक्षा का परिणाम नहीं है। ढोल की लय उसे संघर्ष के समय उत्साहित करती है और उसके शरीर में नई शक्ति भर देती है।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें चाँद सिंह से मुकाबले में ढोल की ध्वनि लुट्टन के लिए मानो निर्देश बन जाती है। वह उसी से दाँव लगाने और प्रतिद्वंद्वी का सामना करने की प्रेरणा पाता है। इसलिए गुरु कहने का आधार केवल मनोरंजन नहीं, उसके जीवन में ढोल की मार्गदर्शक भूमिका है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लुट्टन ने कुश्ती का प्रशिक्षण किसी गुरु से नहीं लिया था। अखाड़े में बजती ढोल की ध्वनि से ही उसे दाँव-पेंच की प्रेरणा और लड़ने का साहस मिला। उसने अपनी विजय का श्रेय ढोल को दिया; इसलिए वह ढोल को अपना गुरु मानता था।

चरण 4: निष्कर्ष लुट्टन ने कुश्ती का प्रशिक्षण किसी गुरु से नहीं लिया था। अखाड़े में बजती ढोल की ध्वनि से ही उसे दाँव-पेंच की प्रेरणा और लड़ने का साहस मिला। उसने अपनी विजय का श्रेय ढोल को दिया; इसलिए वह ढोल को अपना गुरु मानता था।

त्वरित सुझाव: ढोल की लय से दाँव की प्रेरणा, फिर साहस और विजय का क्रम जोड़ें; इसी से उसे गुरु मानने का कारण स्पष्ट होगा।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

"काले मेघा पानी दे" पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि जीजी पर गांधी का प्रभाव था। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न जीजी की आस्था और गांधी का प्रभाव की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें जीजी के विचारों में गांधी जी के प्रति आदर और त्याग में विश्वास साथ दिखाई देते हैं। वे केवल निजी लाभ के लिए संचय करने को उचित नहीं मानतीं।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें लेखक पानी की बर्बादी का विरोध करता है, पर जीजी समझाती हैं कि प्राप्त करने के लिए पहले देना पड़ता है। जैसे किसान बीज बोता है, वैसे ही वे इंदर सेना पर पानी डालने को आगे वर्षा पाने के लिए अर्पण मानती हैं। यहाँ उनके तर्क में निहित त्याग और उदारता को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी गांधी जी का नाम आदर से लेती थीं। उनका विश्वास था कि पहले त्याग और दान करने से ही कुछ प्राप्त होता है। इंदर सेना को पानी देना वे पानी का बीज बोना मानती थीं। उनका यह त्यागभाव गांधीवादी विचारों का प्रभाव दिखाता है।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी गांधी जी का नाम आदर से लेती थीं। उनका विश्वास था कि पहले त्याग और दान करने से ही कुछ प्राप्त होता है। इंदर सेना को पानी देना वे पानी का बीज बोना मानती थीं। उनका यह त्यागभाव गांधीवादी विचारों का प्रभाव दिखाता है।

त्वरित सुझाव: गांधी के त्यागभाव को पहले देने के विचार से जोड़ें और इंदर सेना पर पानी डालने को बीज बोने का उदाहरण दें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

"बाज़ार दर्शन" पाठ में आए 'पर्चेजिंग पावर' से आप क्या समझते हैं ? इसका सकारात्मक उपयोग कैसे किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न क्रयशक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें धन होने से व्यक्ति में वस्तुओं को खरीद सकने की क्षमता आती है। पर केवल खरीदने की सामर्थ्य होना, हर आकर्षक वस्तु की आवश्यकता होने का प्रमाण नहीं है।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें पाठ बाजार के जादू और जरूरत के बीच अंतर समझाता है। जो व्यक्ति अपनी जरूरत स्पष्ट करके बाजार जाता है, वह उससे उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त करता है। क्रयशक्ति का प्रदर्शन और लालच अनावश्यक संग्रह को बढ़ाते हैं; अतः विवेक, संतोष और उपयोगिता उसके सकारात्मक उपयोग का आधार हैं।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता अर्थात क्रयशक्ति है। इसका सकारात्मक उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानकर उपयोगी वस्तुएँ खरीदने में किया जा सकता है। बाजार के आकर्षण में अनावश्यक खरीद से बचना और धन का संयमित उपयोग करना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता अर्थात क्रयशक्ति है। इसका सकारात्मक उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानकर उपयोगी वस्तुएँ खरीदने में किया जा सकता है। बाजार के आकर्षण में अनावश्यक खरीद से बचना और धन का संयमित उपयोग करना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: पहले क्रयशक्ति का अर्थ खरीदने की आर्थिक क्षमता लिखें, फिर आवश्यक खरीद और बाजार के आकर्षण का अंतर स्पष्ट करें।

13(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बगुलों के पंख' कविता के आधार उस सौन्दर्य का वर्णन कीजिए जिसने कवि के मन को मोह लिया। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न काले बादलों में उजले पक्षियों का सौंदर्य की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें कविता का दृश्य आकाश में छाए काले बादलों और उनके बीच उड़ते उजले बगुलों से बनता है। दोनों के रंगों का विरोध दृश्य को विशेष आकर्षण देता है।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें बगुलों की पंक्ति की सुंदरता स्थिर चित्र जैसी नहीं, उड़ान और गति से युक्त है। उजले पंखों की आभा कवि का ध्यान पूरी तरह खींच लेती है। उसकी दृष्टि उसी दृश्य में अटक जाती है। उत्तर में काले बादल, श्वेत पंख और मन पर पड़ने वाला सम्मोहक प्रभाव साथ लिखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों से भरे आकाश में उड़ते बगुलों के उजले पंखों की पंक्ति कवि को अत्यंत सुंदर लगती है। अँधेरी पृष्ठभूमि पर उनकी श्वेत आभा और लयपूर्ण उड़ान मन को बाँध लेती है। इस अनोखे दृश्य से कवि सम्मोहित होकर स्वयं को रोक नहीं पाता।

चरण 4: निष्कर्ष काले बादलों से भरे आकाश में उड़ते बगुलों के उजले पंखों की पंक्ति कवि को अत्यंत सुंदर लगती है। अँधेरी पृष्ठभूमि पर उनकी श्वेत आभा और लयपूर्ण उड़ान मन को बाँध लेती है। इस अनोखे दृश्य से कवि सम्मोहित होकर स्वयं को रोक नहीं पाता।

त्वरित सुझाव: काले बादल, उजले पंख और कवि का सम्मोहन—इन तीन बिंदुओं को जोड़कर दृश्य तथा उसका प्रभाव लिखें।

13(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'बादल राग' कविता में कवि बादल को किस रूप में बुलाता है, और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न बादल का क्रांतिकारी और जीवनदायी रूप की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें बादल कविता में केवल प्राकृतिक वर्षा का साधन नहीं है। वह परिवर्तन, संघर्ष और शोषित जन की मुक्ति की आशा का प्रतीक भी है।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें किसान का शरीर शोषण से कमजोर हो गया है, फिर भी बादल को देखकर उसमें आशा जागती है। दूसरी ओर वैभव और शोषण पर आश्रित लोग गर्जना से डरते हैं। इन विपरीत प्रतिक्रियाओं से बादल के क्रांतिकारी स्वरूप का अर्थ स्पष्ट होता है। उसका जीवनदायी रूप किसान और छोटे पौधों के पक्ष में है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि बादल को विप्लव के वीर के रूप में बुलाता है। उसकी गर्जना शोषकों को भयभीत करती है और उसकी वर्षा पीड़ित किसानों को नया जीवन देती है। कवि चाहता है कि बादल की क्रांतिकारी शक्ति शोषण समाप्त करके साधारण जन में आशा और उत्साह जगाए।

चरण 4: निष्कर्ष कवि बादल को विप्लव के वीर के रूप में बुलाता है। उसकी गर्जना शोषकों को भयभीत करती है और उसकी वर्षा पीड़ित किसानों को नया जीवन देती है। कवि चाहता है कि बादल की क्रांतिकारी शक्ति शोषण समाप्त करके साधारण जन में आशा और उत्साह जगाए।

त्वरित सुझाव: विप्लव के वीर के साथ शोषकों का भय और किसानों की आशा दोनों लिखें; इससे बादल की क्रांतिकारी भूमिका स्पष्ट होगी।

13(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न दरिद्रता का रावण रूप की समझ जाँचता है। उत्तर में पाठ के प्रसंग और उसके आशय का स्पष्ट संबंध बताना आवश्यक है।
- लगभग 40 शब्दों के मुख्य उत्तर में मूल तथ्य और उसका कारण दोनों दें। व्याख्या को पाठ में उपलब्ध संकेतों तक सीमित रखें।

चरण 1: पाठ का प्रसंग समझें कवितावली में आजीविका का संकट व्यापक सामाजिक पीड़ा के रूप में सामने आता है। किसान, व्यापारी, भिक्षुक और सेवक सभी अपने निर्वाह के साधनों से वंचित हैं।

चरण 2: कारण और आशय स्पष्ट करें कवि दरिद्रता के लिए दसानन का रूपक प्रयोग करते हैं। दसानन रावण का नाम है। रावण के आतंक की तरह दरिद्रता भी सारी दुनिया को दबाती और असहाय बनाती है। इसलिए तुलना का कारण केवल दुख नहीं, उसका व्यापक और अत्याचारी प्रभाव है। राम से पुकार में इस पीड़ा से मुक्ति की आकांक्षा व्यक्त होती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। जिस प्रकार रावण ने संसार को आतंकित किया था, उसी प्रकार दरिद्रता ने लोगों को दबा रखा है। आजीविका के साधन छिनने से सब दुखी हैं; इसलिए कवि राम से इस संकट के नाश की प्रार्थना करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। जिस प्रकार रावण ने संसार को आतंकित किया था, उसी प्रकार दरिद्रता ने लोगों को दबा रखा है। आजीविका के साधन छिनने से सब दुखी हैं; इसलिए कवि राम से इस संकट के नाश की प्रार्थना करते हैं।

त्वरित सुझाव: दसानन को रावण के रूप में पहचानें और उसके आतंक को दरिद्रता के व्यापक उत्पीड़न से जोड़कर तुलना का कारण लिखें।